सत्यमेव जयते

महानिदेशक लेखा परीक्षा, (केंद्रीय), का कार्यालय, महाराष्ट्र, मुंबई - 400 051

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST

सह्याद्रि

33 वाँ अंक
वर्ष 2021

आजादी के 75 वर्ष

भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह 2021 की झलकियाँ

माननीय महानिदेशक द्वारा दीप प्रज्वलन

सुश्री पूजा कुमारी द्वारा सरस्वती वंदना की प्रस्तुति

हिंदी पखवाड़ा 2021 के अवसर पर मंचासीन माननीय महानिदेशक महोदय एवं समूह अधिकारीगण

राजभाषा शपथ लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

हिंदी पखवाड़ा 2021 के अवसर पर मंचासीन माननीय महानिदेशक द्वारा संबोधन

दीप प्रज्वलन के अवसर पर उपस्थित समूह अधिकारीगण

वर्ष 2021 अंक 33 वाँ

सत्यमेव जयते

सह्याद्रि

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय

सी-25, ऑडिट भवन, बांन्द्रा - कुर्ला संकुल, बांन्द्रा (पूर्व), मुंबई - 51.

मुखपृष्ठ

इस अंक में रचयिताओं द्वारा व्यक्त किये गए विचार उनके अपने हैं । संपादक मंडल का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों व लेखन की मौलिकता संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है। रचना / आलेखों के संपादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मंडल में निहित होंगे।

सह्याद्रि परिवार

संरक्षक

श्री. के. पी. यादव

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुम्बई

प्रकाशन

सह्याद्रि (हिन्दी पत्रिका 33 वां अंक)

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय) का कार्यालय, मुम्बई - 400 051, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक

सुश्री रचना जयपाल सिंह

उपनिदेशक

मुख्य संपादक

सुश्री पूर्णिमा. एस.

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री. रणजीत सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

सुश्री वाणी विशालाक्षी

वरिष्ठ अनुवादक

श्री. राहुल कुमार वर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री. बिना कुमारी राय

कनिष्ठ अनुवादक

"पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।
अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।"

सह्याद्रि रचनाएँ 2021

क्र.	विषय	रचनाकार	पृ.क्र.
1.	सह्याद्रि अंक एवं मुख पृष्ठ		1.
2.	सह्याद्रि परिवार		2.
3.	सह्याद्रि रचनाएँ 2021		3.
4.	गृहमंत्री का संदेश		5.
5.	उप महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षक (केंद्रीय राजस्व) का संदेश		8.
6.	संरक्षक की कलम से		9.
7.	प्रधान संपादक की कलम से		10.
8.	आपके पत्र		11.
रचनाएँ			
9.	हल्दी और कोविड 19	श्री. के. पी. यादव / महानिदेशक लेखापरीक्षा	13.
10.	पेनीस्टॉक	श्री. के. पी. यादव / महानिदेशक लेखापरीक्षा	14-15.
11.	फर्म के मूल्यांकन	श्री. के. पी. यादव / महानिदेशक लेखापरीक्षा	16-17.
12.	मैंग्रोव (सदाबहार वन) वास्तव में खास क्यों है ?	श्री. विवेक संभारिया / निदेशक	18.
13.	आजादी का अमृत महोत्सव : बॉम्बे में "रॉयल इंडियन नेवल" विद्रोह	अनुवादक श्री पद्‌माकर कुशवाहा / निदेशक	19-20.
14.	पूजा नहीं कुछ काम करो	सुश्री रचना जयपाल सिंह / उपनिदेशक	21.
15.	मुंबई मेरी जान (लॉकडाऊन पर आधारित)	श्री विजय भूषण / व.ले.प.अ.	22.
16.	मंजर	श्री विजय भूषण / व.ले.प.अ.	22.
17.	एक बेटी की कहानी	श्री राजेश सिंह / व.ले.प.	23-26.
18.	रियायत की किश्त	श्री कुमार सौरभ / डी. ई. ओ	27.
19.	राखी के दिन आना दीदी	श्री कुमार सौरभ / डी. ई. ओ	27.
20.	भारतवर्ष	श्री आदित्य कुमार / व.ले.प.	28.
21.	मैं इधर तुम उधर	सुश्री वाणी विशालाक्षी / वरिष्ठ अनुवादक	29-30.
22.	चित्रकारी	सुश्री रुचिता खोत सुपुत्री श्री सुनील खोत	31.

सह्याद्रि रचनाएँ 2021

क्र.	विषय	रचनाकार	पृ.क्र.
23.	श्रेष्ठता प्रमाणपत्र वितरण समारोह 2021 की झलकियाँ		32.
24.	चित्रकारी	सुश्री अंजलि भतीजी श्री बिना रॉय/ कनिष्ठ अनुवादक	33 .
25.	किस्से कोरोना काल के	श्रीमती मनीषा वि. कदम / पर्यवेक्षक	34-35.
26.	नीम का पेड़	श्री राहुल कुमार वर्मा / कनिष्ठ अनुवादक	36.
27.	हम तुम	श्री राहुल कुमार वर्मा / कनिष्ठ अनुवादक	36.
28.	ओ कोरोना कब जायेगा तू	सुश्री बिना कुमारी राय / कनिष्ठ अनुवादक	37.
29.	हिंदी का रुदन	श्री फूल सिंह ढाका / श्री विकास स. ले. प. अ. के ताऊजी	38.
30.	अब क्या जश्न मनाऊँ	सुश्री मंजुला महराणा / व. ले. प. अ.	39.
31.	सपना	सुश्री मंजुला महाराणा/व. ले. प. अ.	40.
32.	नजरिया	श्री मुनिनाथ यादव / स. ले. प. अ.	41.
33.	टोपी	श्री अमित कुमार / डी. ई. ओ.	42.
34.	अगर शाम होती एक इंसान	श्री संजीव कुमार / ले. प.	42.
35.	जीवन के सात अनमोल प्रश्न	सुश्री रुक्मिणी रामचंद्रन / स. ले. प. अ.	43.
36.	इश्क पनप रहा है	राकेश कुमार सिंह / स. ले. प. अ.	44.
37.	ये लोग	अतुल यादव, सुपुत्र श्री मुनिनाथ यादव / स. ले. प. अ.	44.
38.	कोविड 19	श्री हेमंत / डी. ई. ओ.	45-46.
39.	"क" रोना से "ड" रोना	सुश्री स्नेहा सुथार / पर्यवेक्षक	47.
40.	मेरी सोना	सुश्री बिना कुमारी राय / कनिष्ठ अनुवादक	48.
41.	भोजन और जीवन	राकेश कुमार सिंह / स. ले. प. अ.	49.
42.	नया सपना	कु. आदित्य रॉय / भतीजा सुश्री बिनाकुमारी राय कनिष्ठ अनुवादक	50.
43.	हिन्दी साहित्य की प्रश्नोत्तरी	श्री. के. पी. यादव / महानिदेशक लेखापरीक्षा	51.
44.	सेवानिवृत्ति की शुभकामनाएँ		52 .

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियों !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।“

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियों! जैसा कि आप जानते हैं,कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग

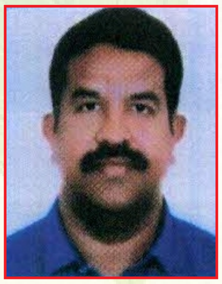

उप महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षक (केंद्रीय राजस्व)

संदेश

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) मुंबई के कार्यालय की राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका "सह्याद्रि" के 33 वें अंक के प्रकाशन के बारे में जानकर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी को बढावा देना एवं इसके नियमों की अनुपालना प्रत्येक सरकारी कार्मिक का दायित्व है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं इसके प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

हिंदी भाषा हमारी मिली-जुली संस्कृति का भी प्रतीक है। मुझे यह बताते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में भी अटल बिहारी वाजपेयी जी ने विदेश मंत्री के रुप में सन् 1977 में पहली बार हिंदी में संबोधन कर अंतराष्ट्रीय पटल पर हिंदी की शोभा बढ़ाई। भारतवर्ष के अलावा आज हिंदी फिजी, नेपाल, त्रिनिदाद और टोबैगो, सिंगापुर, मॉरिशश आदि देशों में भी बोली जाती है। सोशल मीडिया भी हिंदी की छवि को निरंतर निखार रहा है तथा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान प्राप्त हुई है।

मैं हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका से जुडे सभी लोगों, रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

के. आर श्रीराम

उप महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षक (केंद्रीय राजस्व)

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई

संरक्षक की कलम से....

प्रिय साथियों

अपने कार्यालय की ई-पत्रिका सहयाद्रि के 33 वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी को समर्पित यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी ।

राजभाषा हिंदी का देश-विदेश में निरंतर रुप से बढता हुआ प्रचलन इसकी समृध्दि का द्योतक है । हिंदी विश्व में बोली जानेवाली प्रमुख भाषाओं में से एक है । विश्व की प्राचीन, समृद्‍ध , सरल और वैज्ञानिक भाषा, हिंदी, न केवल भारत की राजभाषा है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है ।

कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका सहयाद्रि कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पत्रिका के सभी रचनाकारों द्‍वारा किया गया एक सराहनीय प्रयास है ।

मैं इस पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल व रचनाकारों तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का इस प्रयास हेतु ह्रदय से धन्यवाद देता हूँ तथा पत्रिका के उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना देता हूँ ।

के. पी. यादव

महानिदेशक

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई

प्रधान संपादक की कलम से

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका "सहयाद्रि" के 33 वें अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है । इस उपलब्धि के लिए "सहयाद्रि" पत्रिका के परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं । पत्रिका का सफल प्रकाशन, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं आस्था को दर्शाता है ।

हिंदी पत्रिकओं का प्रकाशन कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु कार्यालय के सभी कार्मिकों का एक विनम्र प्रयास है । इससे राजभाषा हिंदी के प्रति कार्यालय के कार्मिकों का रुझान बढ़ा है और हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण बना है ।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व में प्रकाशित अंको की भाँति पाठकों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा तथा राजभाषा हिंदी के विकास में सहायक होगा । पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं रचनात्मक उन्नति हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना ।

रचना जयपाल सिंह
उपनिदेशक/राजभाषा

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-19/ 123
दिनांक: 17-11.2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल,
बांद्रा(पूर्व), मुंबई-400051

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "सहयाद्री" के बतीसवें अंक की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सहयाद्री" के 32वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनायें उच्च कोटि की है। विशेषकर सुश्री नविता यादव द्वारा लिखित "अनमोल वचन", सुश्री रचना जयपाल सिंह द्वारा लिखित "प्रेरणादायक सुविचार", श्री राकेश रोशन द्वारा लिखित "पिता का जीवन", सुश्री वाणी विशालाक्षी द्वारा लिखित "मतभेद", श्री राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित "क्यों कहता है इंसान" एवं श्री बलराम राणा द्वारा लिखित "बदलता जमाना" अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

17/11/2020
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

---

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 08.12.2020

सेवा में,

उप निदेशक/प्रशासन
भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
प्रधानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुम्बई, का कार्यालय
सी-25, ऑडिट भवन, आयकर भवन के पीछे,
बांद्रा-कुर्ला संकुल,बांद्रा(पूर्व), मुम्बई – 400051

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
संदर्भ:-आपका ई-मेल -1692 दिनांक 30.10.2020

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह हिन्दी पत्रिका **"सहयाद्रि"** वर्ष 2020 का ई-संस्करण प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट – मांढर, जीरो प्वाइंट, रायपुर – 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082 • फैक्स/Fax : 2582505 • ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

---

संख्या/No राभाअ/सा.सा.क्षे.ले.प./एच-11011/के-196/प्रतिक्रिया/2018-21/पे.सं.- 159

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान
जनपथ, जयपुर- 302 005
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I) RAJASTHAN
Janpath, Jaipur-302 005

दिनांक/Date 05-11-2020

उप-निदेशक/प्रशासन,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
सी-25, ऑडिट भवन, बान्द्रा-कुर्ला संकुल, बान्द्रा (पूर्व),
मुम्बई-400051.

विषय- हिन्दी पत्रिका 'सह्याद्री' के 32वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सह्याद्री" के 32वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं आकर्षक हैं। पत्रिका को प्रभावी बनाने में कार्यालय कर्मियों के साथ-साथ उनके परिजनों का योगदान अभिनन्दनीय है। संपादक मण्डल द्वारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलता से किया गया है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका "सह्याद्री" इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

भवदीय

(कमलेश कुमार रावत)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

टेलीफोन : 2385430-39, 2385131, 2385232 फैक्स : 0141-2385181 ई-मेल : agaurajasthan1@cag.gov.in
Telephone: 2385430-39, 2385131, 2385232 Fax : 0141-2385181 E-mail : agaurajasthan1@cag.gov.in

---

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), JHARKHAND, RANCHI - 834002

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2020-21/ 10

दिनांक/Date 25/11/2020

सेवा में,

उप निदेशक/ प्रशासन
प्रधान निदेशक का कार्यालय (केंद्रीय),
मुंबई - 400051

विषय- हिन्दी पत्रिका "सह्याद्री" के 2020 वें संस्करण की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **"सह्याद्री" के 2020 वें संस्करण** की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

25/11/2020
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

दूरभाष/Telephone : 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax : 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail : agaujharkhand@cag.gov.in

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम, बेलतला, गुवाहाटी - 29
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), ASSAM, BELTOLA, GUWAHAT- 781029

सं. हि.प्र/ले.प/प.पा./खंड-I/2020-21/215 — दिनांक: 11.11.2020

11 NOV 2020

सेवा में,

उप निदेशक/प्रशासन
प्रधान निदेशक का कार्यालय (केंद्रीय)
मुंबई - 400051.

विषय: आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'सहयाद्री' 2020 के ई - संस्करण की पावती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका **'सहयाद्री'** 2020 के ई - संस्करण की एक प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में श्री के.पी. यादव, प्रधान निदेशक, द्वारा रचित 'प्रेमचंद' एवं 'कब तक चुपचाप रहूँ', सुश्री पूर्णिमा एस विरचित 'पेंटिंग' एवं श्री रंजन कुमार सिंह की रचना 'आओ हिंदी दिवस मनाएँ' एवं अन्य सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी । पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपूर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II MAHARASHTRA, NAGPUR

सत्यमेव जयते

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/22/2020-21/जा.क्र.250
दिनांक: - 04/11/2020

सेवा में,
उप निदेशक/प्रशासन,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
सी -25 ,ऑडिट भवन, बांद्रा - कुर्ला संकुल,
बांद्रा(पूर्व) मुंबई - 400051

विषय:- राजभाषा ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 32 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "सह्याद्रि" के 32 वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर सुश्री वाणी विशालाक्षी, वरिष्ठ अनुवादक का लेख "मतभेद", श्री गौरव कुमार, एम टी एस की रचना "माँ तो बस माँ होती है", तथा श्री राजीव की रचना "शहर", सआदि उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई । पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र. 220, सिव्हिल लाईन्स, नागपूर-440001
दुरभाष/Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स /Fax : 0712-2524130
'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
Website :http://agmaha.cag.gov.in
e mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/सहाद्री/2020-21/152
दिनांक: 04.11.2020

सेवा में,

उप निदेशक/प्रशासन,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,
सी-25, आडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व),
मुंबई-400051

विषय: **हिंदी पत्रिका 'सहाद्री' 2020 का ई-संस्करण।**

महोदय,

ई-मेल द्वारा दिनांक 30.10.2020 को आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सहाद्री' 2020 का ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटी की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं। विशेष रूप से 'हिंदी', 'आओ हिंदी दिवस मनाएं', 'कोविड 19-एक वैश्विक महामारी या सीख', 'मतभेद', 'भोजन और जीवन', 'सेना में जवान, खेतों में किसान', 'कलसुबाई शिखर ट्रेक यात्रा वृतांत' तथा 'दो जून की रोटी' आदि रचनाएं अत्यन्त सुरूचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक व मनोरंजक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2660704, 2615377 फैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in D:\Hindi CellNet_Hindicell_DDJ_Mangal.doc

हल्दी और कोविड - 19

हल्दी (Curcuma longa L.) एशियाई संस्कृति का एक अभिन्न अंग है जिसके अनेक औषधीय गुणों के कारण आयुर्वेद, यूनानी और सिध्द जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों मे सदियों से उपयोग किया जाता रहा है। करक्यूमिन, हल्दी का प्रमुख करक्यूमॉइड, कई संकेतन मार्गों को प्रभावित करता हैं तथा इसमें सूजनरोधी, एंटी-ऑक्सीडेंट, सूक्ष्मजीवनिवारक, हाइपोग्लाइसेमिक, घाव भरने, रसायन निवारक, रसायन संवेदीकरण और रेडियो संवेदीकरण गुण पाए जाते हैं। करक्यूमिन की जैव उपलब्धता को बढाने के लिए, दवा बनाने की प्रक्रिया मे नई तकनीकों जैसे कि सहायक नैनोकणी, लिपोसोम, मिसेल और फॉस्फोलिपिड कॉम्प्लेक्स का मूल्यांकन किया जाता है। इसकी लगभग 6-7 ग्राम की उच्च खुराक के प्रतिदिन सेवन से सबसे अधिक प्रभावी होने का प्रलेखित साक्ष्य उपलब्ध है, जिस का सीधे सेवन किया जा सकता है। इसे व्यापक रुप से एशिया मे खांसी, गले में खराश और सांस की बीमारियों के लिए एक सामान्य घरेलू उपचार के रुप में उपयोग किया जाता है।

हाल के एक अध्ययन में, यह पाया गया कि हल्दी में प्रबल एंटीवायरल गुण होते हैं। हालांकि, कोरोनावायरस को ठीक करने में इस शक्तिशाली एंटीवायरल मसाले की प्रभावशीलता को साबित करने के लिए अभी भी बहुत सारे शोध की आवश्यकता है, लेकिन यह तथ्य कि हल्दी में एंटीवायरल गुण होते हैं, यह दर्शाता है कि भविष्य मे यह एक संभावित इलाज हो सकता है।

भारत में हल्दी भारतीय घरों का अत्यावश्यक हिस्सा रही है। धार्मिक अनुष्ठानों में इसके उपयोग से लेकर औषधीय प्रयोजनों एवं खाना पकाने के लिए मसाले के रुप में उपयोग करने तक, हल्दी हमारे जीवन का एक अविभाज्य हिस्सा रही है।

सदियों से इस मसाले का व्यापक रुप से एक रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और स्वास्थ को समृध्द करने वाले गुणों के लिए उपयोग किया जाता रहा है। जानलेवा कोरोना वायरस के हमले के साथ ही इस चमत्कारी मसाले का इस्तेमाल पहले से कहीं ज्यादा हो रहा है, दवाईयां बनाने से लेकर, सेहत के लिए टॉनिक और न जाने किन किन चीजों के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है।

इन सबके बीच, हाल ही में एक शोध में पाया गया कि हल्दी में प्राकृतिक घटक करक्यूमिन की मौजूदगी कुछ वायरस को खत्म करने में मदद कर सकती है।

जर्नल ऑफ जनरल वायरोलॉजी में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक करक्यूमिन, संक्रामक गैस्ट्रोएंटेराइटिस वायरस (टीजीईवी) - एक अल्फा-ग्रुप कोरोनावायरस जो सूअरों को संक्रमित करता है, कोशिकाओं को संक्रमित करने से रोक सकता है। उच्च मात्रा में उपयोग करने से यह भी पाया गया कि यह कंपाउंड वायरस के कणों को मारने में सक्षम है।

टीजीईवी के संक्रमण से सूअर के बच्चो में संक्रमणीय गैस्ट्रोएंटेराइटिस नामक बीमारी होती है, जिससे दस्त, गंभीर निर्जलीकरण और मृत्यु भी हो जाती है। टीजीईवी अत्यधिक संक्रामक है और दो सप्ताह से कम उम्र के सूअर के बच्चों में हमेशा घातक ही होता है, इस प्रकार यह वैश्विक स्वाइन उद्योग के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है।

अध्ययन के अनुसार, करक्यूमिन के उपयोग ने डैंगू वायरस, हेपेटाइटिस बी और जीका वायरस सहित कुछ प्रकार के वायरस की प्रतिकृति को बाधित किया हैं। इस यौगिक में कई महत्वपूर्ण जैविक प्रभाव भी पाए गए है, जिनमे एंटीटयूमर, सूजनरोधी और जीवाणुरोधी गतिविधियां शामिल हैं। डॉक्टर जी के अनुसार कम साइड इफेक्ट होने के कारण करक्यूमिन को इस शोध के लिए चुना गया था। उन्होंने कहाः "वायरल रोगों की रोकथाम और नियंत्रण में बडी़ कठिनाइयाँ हैं, खासकर जब कोई प्रभावी टीके नही हैं। पारंपरिक चीनी दवा और इसके सक्रिय तत्व अपने अनेक फायदों जैसे सुविधाजनक अधिग्रहण और कम दुष्प्रभावों के कारण एंटीवायरल दवाओं के लिए उत्तम जाँच प्रणाली है।

मसाला निर्यात कारोबार ने 2019-20 के दौरान पहली बार मूल्य में 10% की वृध्दि के साथ 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर का आँकड़ा पार किया, भले ही देश से कुल निर्यात में पूरे 2019-20 के लिए 5% की कमी देखी गई। बांग्लादेश, मोरक्को, ईरान, मलेशिया, चीन और पाकिस्तान जैसे अन्य देशों से भी मांग उत्साहजनक संकेत दिखा रही है।

श्री के पी यादव, महानिदेशक

सी.ए.जी. रिपोर्ट के गलियारों से

पेनीस्टॉक पर दीर्घावधि पूंजी लाभ (Long-term Capital gains)

पेनीस्टॉक वे स्टॉक होते है जो स्टॉक ऐक्सचेंजो पर सूचिबध्द होते हैं जिनमें बहुत कम मूल्य पर कारोबार होता है, जिनमें बहुत कम बाज़ार पूंजीकरण होता है, यह अधिकतर अतरल रुप में होता हैं। यह स्टॉक स्वरुप में काफी अव्यवहार्य होते है तथा इन्हें तरलता की कमी, शेयरहोल्डरों की कम संख्या तथा सूचनाओं का सीमित प्रकटीकरण के कारण अधिक जोखिम वाला माना जाता है।

आयकर निदेशालय (जांच) कोलकाता नें अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात कोलकाता के अंदर निभाव प्रविष्ट संचालकों[1] की जांच की तथा 84 बीएसई सूचिबध्द पेनी स्टॉक की पहचान की तथा 32 से अधिक शेयर ब्रोकिंग ईकाईयों के कार्यालय परिसर में कई तलाशी और सर्वेक्षण किया कि वे जाली एलटीसीजी[2] में सक्रिय रुप से शामिल थे। डीआईटी (जांच) ने कई निभाव प्रविष्ट[3] प्रदाताओं के कार्यालय परिसर में सर्वेक्षण किया और उनके बयानों को दर्ज किया।

डीआईटी (जांच) कोलकाता निभाव प्रविष्टि प्रदाताओं के अभिलेखों से 64,811 पैन-इंडिया लाभकतांओं को पहचाना गया जिनमें 38,000 करोड़ (लगभग) की संदेहास्पद एलटीसीजी छूट शामिल हैं तथा उनकी रिपोर्टकोडीजीआईटी के माध्यम से क्षेत्राधिकार निर्धारण विंग को भेज दिया है।

हमने मुंबई प्रभार को लेखापरीक्षा के लिए चयन किया, क्योंकि 38,000 करोड़ के कुल संदेहास्पद एलटीसीजी छूट में से 17,344 लाभकर्ताओं (27 प्रतिशत) वाले 12,234 करोड़ (32प्रतिशत) मुंबई प्रभार के अंतर्गत आता था।

क्र.सं.	विवरण	लाभार्थियों की संख्या	सम्मिलित राशि (Amount involved) (रु. करोड़ में)
१	देशभर में लाभार्थियों की संख्या	64811	38,000
२	महाराष्ट्र में लाभार्थियो की संख्या	15107	10,175
३	लेखापरीक्षा के लिए चयनित लाभार्थियो की संख्या	547	2984.05
४	लेखापरीक्षित लाभार्थियो की संख्या	499	2803.90
५	लेखापरीक्षा में आपत्ति दर्ज	99	527.90

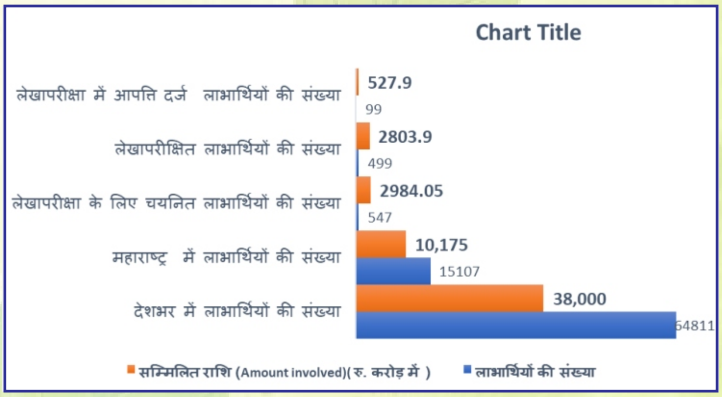

लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम निम्नलिखित हैं:

1. एलटीसीजी दावा करने के बाबजूद 71 लाभार्थी न तो कभी संवीक्षा के लिए चयनित किये गए न ही अधिनियम की धारा 148 के अंतर्गत मामले पुनः से खोले गए जिसमे संदेहास्पद एलटीसीजी छूट 193.84 करोड़ शामिल थी।
2. संवीक्षा हेतु 25 लाभार्थियों को चयनित किया गया परंतु इसमें शामिल छूट प्राप्त एलटीसीजी के संबंध में परिवर्धन असंगत रुप से किया गया था अथवा नहीं किया गया जिसमे संदेहास्पद एलटीसीजी छूट 270.51 करोड़ शामिल थी।

[1]डीआईटी (जाँच) रिपोर्ट के अनुसार, कोई प्रविष्टि आपरेटर वह व्यक्ति है जो नकदी में कमीशन की निश्चित प्रतिशत प्रभारित करने के बाद समान राशि के नकदा चैंक के बदले मे निभाव प्रविष्टि देने का कार्य करता है।

[2]एलटीसीजी-दीर्घावधि पूंजीगत लाभ

[3]डीआईटी (जाँच) रिपोर्ट के अनुसार, कोई प्रविष्टि आपरेटर वह व्यक्ति है जो नकदी में कमीशन की निश्चित प्रतिशत प्रभारित करने के बाद समान राशि के नकदा चैंक के बदले में निभाव प्रविष्टि देने का कार्य करता है।

3. विक्रय प्रतिफल और कमीशन खर्चो की अस्वीकृति में असंगतता:

अघोषित आय को घोषित आय में परिवर्तित करने में संबध्द लागत को विभाग द्वारा कमीशन खर्च के रुप में अस्वीकृत किया गया । इनमे अस्वीकृत करने की दृष्टिकोण में कोई संगती नहीं थी। 40 मामलों में कमीशन के तहत अस्वीकृति नहीं दी गई, जबकि 69 मामलों में कमीशन की अस्वीकृति में 0.5 से 5 प्रतिशत तक का अंतर था।

निष्कर्ष

एलटीसीजी दावा करने की आयकर विभाग के पास सूचना होने के बाबजूद भी पेनी स्टॉक कंपनियों के शेयरों में व्यापार करने वाले निर्धारितियों की आईटीआर[४] को न तो संवीक्षा हेतु चुना गया था और न ही संवीक्षा हेतु दोबारा खोला गया था। आयकरविभाग ऐसे निर्धारितियों को आईटीआर फाइल करने का नोटिस जारी करने में विफल रहा जो पेनी स्टॉक में व्यापार करते थे परन्तु अपनी आईटीआर फाइल नहीं की थी। ऐसे नॉन फाइलर्स की पहचान करने के लिए नॉन फाइलर्स निगरानी प्रणाली का भी प्रभावपूर्ण रुप से उपयोग नहीं किया गया था। निर्धारण अधिकारियों में इस तथ्य के बावजूद की परिवर्धन रुप से उपयोग नहीं किया गया था। निर्धारण अधिकारियों में एकरुपता नहीं थी। कुछ मामलों में, निर्धारण अधिकारियों ने दावा किए गए छूट प्राप्त एलटीसीजी के लिए कोई परिवर्धन नहीं किया था जिसके लिए निर्धारण आदेशों में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया था।

इसके अलावा, निर्धारण अधिकारियों ने विभिन्न प्रतिशतता पर परिवर्धन किए थे जबकि निर्धारितियों ने समान पेनी स्टॉक कंपनियों के शेयरों में व्यापार किया था। आयकर विभाग में पेनी स्टॉक में व्यापार कर रहे लाभाथियों के मामलों सें संव्यवहार करने के लिए कोई पध्दति नहीं थी क्योंकि कुछ मामलों में केवल दावा की गई एलटीसीजी को ही अननुमत किया गया था। प्रवेश और निकास प्रदाता को पेनी स्टॉक के लाभार्थी से प्राप्त कमिशन की अननुमती में भी अंतर है।

सिफारिश

आयकर विभाग सीएएसएस५ मानदंडो को इस प्रकार पुन:परिभाषित करें कि आईटीआर या अन्य स्त्रोतों से आयकर विभाग के पास उपलब्ध विशिष्ट सूचना का, संवीक्षा हेतु मामलों का चुनाव करनें में प्रयोग किया जा सके।

सीएएसएस के अंतर्गत संवीक्षा हेतु चयन की पध्दती को नियंत्रक एरां महालेखापरीक्षक के साथ साझा किया जाय जैसा कि नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की २०१९ के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं.९ में कहा गया था ताकि लेखापरीक्षा में देखा जा सके कि क्या संवीक्षा हेतु मामलों का चयन सीएएसएस मानदंडो के अनुसार हुआ है।

आयकर विभाग यह जांच करे कि क्या पेनी स्टॉक पर एलटीसीजी का दावा किये गए मामलों में निर्धारण में हुई त्रुटियाँ भूल के कारण या जानबूझ कर की गई थी यदि ये त्रुटियाँ जानबूझ कर की गई थी तो आईटीडी को कानून के अनुसार आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करनी चाहिए।

(श्री जी. जी. चुडासमा, व.ले.प.अ. एरां श्री ललित बी. श्रीवास्तव, स.ले.प.अ. द्वारा किया गया लेखापरीक्षा योगदान)

श्री. के.पी. यादव / महानिदेशक

लेखापरीक्षा के नीतिगत प्रभाव

विषय - "फर्म का मूल्यांकन" - निर्धारण अधिकारी द्वारा फर्म के मूल्यांकन के दौरान कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखना

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा वर्ष 2013 में आयकर कानून के अंतर्गत "फर्म के मूल्यांकन" विषय पर निष्पादन लेखापरीक्षा किया गया था। निष्पादन लेखापरीक्षा में माह अप्रैल से जुलाई के दौरान फर्मो का जाँच परीक्षण किया गया था। उक्त निष्पादन लेखापरीक्षा के लिए हमारे मुंबई कार्यालय के नामित लेखापरीक्षा दल में श्री. पी. बी. नैथानी (वरिष्ठ ले.प.अ.), श्री राकेश कुमार (स.ले.प.अ.), श्री मनोज कुमार - II (स.ले.प.अ.) तथा श्री रमेश निखारे (व. लेखापरीक्षक) सम्मिलित थे। "फर्म के मूल्यांकन" विषय पर निष्पादन लेखापरीक्षा नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के वर्ष 2014 के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (संख्या 7/2014) में प्रकाशित हुआ है।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा उपरोक्त विषय के निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में प्रस्तावित अनुशंसाओं व सुझावों को ध्यान में रखते हुए एक परिपत्र (संख्या 12/2019) दिनांक 19/6/2019 को जारी किया। इस परिपत्र में निर्धारण अधिकारी को यह निर्देश दिया गया है, कि फर्म के मूल्यांकन के दौरान निम्नलिखित मुद्दों को ध्यान में रखा जाना चाहिए-

(1) फर्म प्रत्यक्ष अपने साझीदारों को पारिश्रमिक एवं पूंजी पे ब्याज, मद पे किया गया व्यय, साझीदारों के लिए कर योग्य आय है। अतः फर्म मूल्यांकन के दौरान फर्म के साझेदार के आयकर विवरणी के साथ विविध प्रकार की जाँच अपेक्षित है। इस संदर्भ में पायी गयी अनिमियता को आयकर कानून की धारा के अनुरुप निपटान किया जाना चाहिए। निर्धारण अधिकारी को फर्म के मूल्यांकन के दौरान साझा पत्र विलेख की एक प्रति मंगवाना चाहिए तथा सहभागी को दिए गए पारिश्रमिक की जाँच करनी चाहिए।

(2) ऐसे उदाहरण पाए गए हैं कि साझा पत्र विलेख में फर्म के साझेदार को ब्याज के भुगतान की राशि दर 12 प्रतिशत से कम है, किन्तु निर्धारण अधिकारी द्वारा 12 प्रतिशत की दर से साझीदार को ब्याज की राशि भुगतान की गयी है।

ऐसी गलतियों से बचा जाना चाहिए। यदि साझा पत्र विलेख में देय ब्याज की दर का प्रावधान 12 प्रतिशत से अधिक है तो उसे अधिकतम १२ प्रतिशत की दर त सीमित किया जाना चाहिए। फर्मो द्वारा ब्याज की राशि की गणना में भिन्न-भिन्न मापदंडो को अपनाया जाता है। इसलिए निर्धारण अधिकारी फर्म के निर्धारण के दौरान आयकर कानून की धारा 40(b)(IV) में निदिंष्ट प्रावधानों के अनुसार साझेदार को देय ब्याज की गणना करें।

(3) ऐसा पाया गया हे की साझा पत्र अभिलेख में सक्रिय साझेदार के लिए प्रस्तावित पारिश्रमिक, आयकर कानून की धारा 40(C)(II)के अनुरुप नहीं होता है। अतः निर्धारण अधिकारी फर्मो के मूल्यांकन के दौरान साझा पत्र अभिलेख में प्रस्तावित पारिश्रमिक एवं आयकर की धारा के अनुरुप गणना कर पारिश्रमिक की राशि तय करें।

(4) आयकर कानून की धारा 40(b)(v) के अंतर्गत पारिश्रमिक की गणना खाता-लाभ की गणना आयकर कानून 40(b) के धारा के ब्याख्या 3 में निर्दिष्ट प्रावधानों के अनुरुप करनी चाहिए। निर्धारण अधिकारी इसकी जांच करें कि आयकर कानून की धार 40(b)(v) के अंतर्गत खाता-लाभ की गणना करते समय पूंजीगत लाभ, ब्याज, किराए से आय, अन्य स्त्रोतों से प्राप्त आय इत्यादि को अपवर्जित किया जाय।

(5) निर्धारण अधिकारी को यह सलाह दिया जाता है, कि आयकर कानून के भाग XVI के प्रावधान का अनुपालन करें। इसका ध्यान रखा जाय कि फर्म एवं उसके साझेदार द्वारा आयकर कानून की धारा 184 में निर्दिष्ट प्रावधानों का अनुपालन किया गया है। अन्यथा आयकर कानून कि धारा 185 के अनुरुप फर्म को प्रदत्त स्वीकार कटौती जैसे पारिश्रमिक, पूंजी पे ब्याज इत्यादि को अस्वीकृत किया जाना चाहिए।

(6) ऐसी जानकारी सामने आयी है जिसमें आयकर कानून कि धारा 80IA के तहत कटौती करने वाले फर्म, कटौती के दौरान पारिश्रमिक, पूंजी पे ब्याज इत्यादि अपने सहभागियों को प्रदान नहीं करते हैं, जिससे लाभ योग्य राशि में अधिकतम कटौती प्राप्त कर सकें। ऐसे अवसरों पर निर्धारण अधिकारी को यह अधिकार है कि आयकर कानून की धारा के उपधारा 10 के तहत फर्म के लाभ को पुन:निर्धरित करे।

(7) फर्म के निर्धारण के दौरान यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि पूर्व कि हानियों कि भरपाई करते वक्त उसके दावों की सत्यता की जांच, आयकर कानून की धारा 78 के अनुरुप किया जाना चाहिए, जिसके अनुसार साझा-परिपत्र अभिलेख में बदलाव होने या उत्तरवर्त्तन होने में ऐसे दावों को स्वीकृत नहीं किया जाना चाहिए।

(8) यदि कर लेखापरीक्षक, कर लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में अधूरी जानकारी प्रदान करता है, और निर्धारण अधिकारी द्वारा कर लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के असरदार उपयोगिता के लिए यह पुन: बताया जा रहा है कि निर्धारण अधिकारी, केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के परिपत्र संख्या 9/2008 दिनांक 31.07.2008 में दिए गए निर्देशो का कड़ाई से अनुपालन करे।

(९) यह स्पष्ट किया जा रहा है, कि यह परिपत्र फर्म के सीमित संवीक्षा निर्धारण में भी लागू रहेगा।

अंग्रेजी में जारी किए गए इस परिपत्र कि प्रति नीचे संलग्न है।

अनुवादक : श्री.के. पी. यादव, महानिदेशक

कृति कुशवाहा

सुपुत्री श्री पद्माकर कुशवाहा/निदेशक

कृति कुशवाहा

सुपुत्री श्री पद्माकर कुशवाहा/निदेशक

मैंग्रोव (सदाबहार वन) वास्तव में खास क्यों है ?

मैंग्रोव पेड़ों और झाड़ियों का एक समूह है जो तटीय अंतर्ज्वारीय क्षेत्र में पाये जाते है। उन्हें "ज्वारीय वन" के रुप में भी जाना जाता है और "उष्णकटिबंधीय आर्द्रभूमि वर्षावन पारिस्थितिकी तंत्र की श्रेणी में आते हैं।

मुंबई जैसे कई तटीय शहरों में मैंग्रोव पर्यावरण संरक्षण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मैंग्रोव का महत्व :

- मैंग्रोव समुद्र तट को सुरक्षा प्रदान करते हैं और सुनामी, चक्रवात जैसी आपदाओं के कारण होने वाली क्षति को कम करते हैं।
- ये उच्च ज्वार को नियंत्रित करके बाढ़ सुरक्षा और उचित जल स्तर बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।
- ये जैविक कार्बन प्रच्छादन में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। ये अद्भुत "कार्बन सिंक" हैं और भूमि पर पाए जाने वाले "हरित कार्बन पारिस्थितिकी तंत्र" के विपरीत "ब्लू कार्बन पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में काम करते हैं।
- ये मिट्टी के कटाव को रोकते हैं।
- ये समुद्री और अन्य जीवों की एक विस्तृत विविधता के लिए पारिस्थितिक आवास प्रदान करते हैं। मैग्रोंव कई मछलियों और कड़े खोल वाले समुद्री जीवों के लिए प्रजनन और भोजन का काम करते हैं।
- वे तटीय समुदायों को आजीविका प्रदान करने में मदत करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से मैंग्रोव को तीव्र शहरीकरण और बुनियादी ढांचा विकास परियोजना, खासकर तटीय क्षेंत्रों में जैसे मुंबई तटीय-सड़क योजना एवं मुंबई मेट्रो रेल योजना के कारण कई खतरों का सामना करना पड़ रहा है।

औद्योगिक अपशिष्ट तथा कीटनाशकों को समुद्र में जाने दिया जा रहा है, साथ ही अनुपचारित सीवरेज भी मैंग्रोव को रोक रहे हैं।

मैंग्रोव वनों की कटाई और जलीय कृषि के लिए मैग्रोंव को साफ करना जैसे कई अन्य खतरों का भी सामना करना पड़ता है।

मैंग्रोव की रक्षा के लिए कई पहल की गई हैं जैसे कि महाराष्ट्र तटीय क्षेत्र प्रबंधन प्राधिकरण (एम.सी.जेड.एम.ए) ने मैंग्रोव की रक्षा के लिए तटीय रेखा के चारों ओर एक दिवार बनाने का प्रस्ताव रखा है। मुंबई में मैंग्रोव के संरक्षण के लिए गोदरेज फाउंडेशन जैसे गैर सरकारी संगठनों द्वारा भी योगदान दिया जा रहा है लेकिन नागरिकों को भी इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की जरुरत है। नागरिकों को मैंग्रोव के संरक्षण को राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाने की जरुरत है ताकि प्रशासन इस मामले को गंभीरता से ले सके।

मैंग्रोव ने शुरु से ही मुंबई के समुद्र तट की रक्षा की है, लेकिन अगर हम मैंग्रोव की रक्षा नहीं करते है तो हमें जितनी कल्पना कर सकते हैं,उससे कम समय में हमें प्रकृति के प्रकोप का सामना करना पड सकता है। हमें मैंग्रोव एवं हमारे समुद्र और महासागरों को सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए और हमेशा इस भविष्यवाणी को याद रखना चाहिए जो कहती है:-

"जब आखिरी पेड़ काट दिया जाएगा,
आखिरी मछली पकड़ ली जाएगी,
और आखिरी नदी जहरीली हो जाएगी,
तब हमें एहसास होगा कि हम पैसे नहीं खा सकते"

श्री विवेक सम्भारिया, निदेशक

आजादी का अमृत महोत्सव : बॉम्बे में 'रॉयल इंडियन नेवल' विद्रोह

15 अगस्त 1947 को, जब स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री, श्री जवाहरलाल नेहरु ने संसद भवन, नई दिल्ली में अपना प्रसिध्द "ट्रिस्ट विद डेस्टिनी" भाषण दिया, बॉम्बे राज्य में एक समानांतर उत्सव मनाया गया। तत्कालीन बॉम्बे राज्य के मुख्यमंत्री, श्री बालासाहेब गंगाधर खेर ने, ओवल मैदान के सामने स्थित तत्कालीन बॉम्बे सिविल सचिवालय (आज का सिटी सिविल एंड सेशंस कोर्ट) मे भारतीय तिरंगा फहराया। उन्होंने इकठ्ठी भीड़ को सम्बोधित करते हुए घोषित किया- "स्वतंत्र भारत के नागरिक, अब आप स्वतंत्र है।" पूरे दो दिनों तक जश्न मनाने वाली भीड़ से घिरे इस शहर में शायद ही किसी ने उन शब्दों पर ध्यान दिया ।

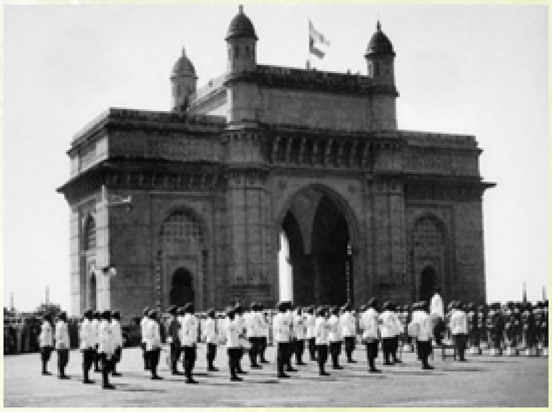

दो दिन बाद, ब्रिटिश सैनिकों की पहली बटालियन ने भारतीय तटों को हमेशा के लिए छोड़ने हेतु दक्षिण बॉम्बे के बैलार्ड पियर में जहाजों पर चढ़ना शुरु कर दिया। यह गहन प्रतीकात्मकता का क्षण था। बॉम्बे, भारतीय उपमहाद्वीप पर पहला क्षेत्रीय अधिग्रहण था और इसी शहर से ब्रिटेन ने अपने सबसे प्रिय उपनिवेश-भारत से निकलना प्रारम्भ किया। देश के स्वतंत्रता संग्राम के कई मील के पत्थर बॉम्बे से शुरु हुए थे - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885), लबर्नम रोड पर मणि भवन में महात्मा गांधी का प्रारंभिक निवास, असहयोग आंदोलन (1920-1922) और खिलाफत आंदोलन (1919-1924) का शुभारंभ, और 8 अगस्त 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन।

हालांकि, जिस चीज ने वास्तव में ब्रिटेन को भारत से बाहर निकलने को मजबूर किया, वह था बॉम्बे में रॉयल इंडियन नेवल (RIN) के नाविकों का विद्रोह जो 18 से 25 फरवरी 1946 तक चला था और जिसे इतिहास में अंकित करते हुए कोलाबा में भारतीय नौसेना के "नौसेना विद्रोह" स्मारक द्वारा यादगार बनाया गया है।

दक्षिण एशिया में ब्रिटिश उपनिवेशवाद का शासन, दुनिया भर में अन्य जगहों की तरह, ब्रिटिश-भारतीय सशस्त्र बलों पर बहुत अधिक निर्भर था। यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था जब ब्रिटिश सरकार अपने शासन को लागू करने के लिए इन ताकतों पर निर्भर नहीं रह सकती थी। विद्रोह सहज रुप से शुरु हुआ जब एक हजार नाविकों ने 18 फरवरी की सुबह सिग्नल ट्रेनिंग जहाज, 'एचएमआईएस तलवार पर तत्क्षणिक काम-बंद करते हुए भूख हडताल शुरु कर दिया। 19 फरवरी 1946 के टाइम्स ऑफ इंडिया के शीर्षक में कहा गया था।। " भारतीय नाविकों का बंबई में हड़ताल : बेहतर परिस्थितियों की मांग" । लेकिन वास्तव में, इन बढते तनावों की जड़ें बहुत गहरी थीं।

यह विद्रोह सशस्त्र सेवाओं की हर शाखा में जंगल की आग की तरह फैल गया था। न केवल बॉम्बे बंदरगाह में (उनमें से कुछ ने कांग्रेस के झंडे लहराए) लंगर डाले हुए नौसैनिक जहाजों में, बल्कि हर प्रमुख नौसेनिक प्रतिष्ठान (कराची, कलकत्ता, विशाखापत्तनम,

कोचीन, लोनावाला और यहां तक कि नई दिल्ली), रॉयल इंडियन एयर फोर्स स्टेशन (सायन, मद्रास,कानपुर और अंबाला), और यहां तक कि बंबई, कराची और कलकत्ता में सेना की इकाइयाँ भी इसमें शामिल हो गयी थीं।यह वो समय था जब द्वितीय विश्व युध्द (1939-1945) अभी-अभी समाप्त हुआ था। प्रथम विश्व युध्द (1914-1919) के दौरान ग्रेट-ब्रिटेन के लिए राष्ट्रवादी दलों के समर्थन के विपरीत, इस बार भारतीयों को अनिच्छा से युद्ध में घसीटा गया था। इस बार नकारात्मक जन-मत के बावजूद भारतीय सैनिकों को एक ऐसे युध्द में भेजा गया जिसे भारत लड़ना नहीं चाहता था। युध्द के बाद के तनाव उन असमान सेवा-शर्तों से और जटिल हो गए, जिनके अनुसार ब्रिटिश तथा भारतीय सैन्य-कर्मियों को विश्राम दिया गया या नौकरी से निकाला गया। ब्रिटिश सैनिकों को बेहतर भत्ते और वेतन दिए गए, जबकि भारतीय सैनिकों को स्पष्ट रुप से अनुचित शर्तों पर अपनी आजीविका खोनी पड़ी।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारक दिल्ली के लाल किले मे सुभाष चंद्र बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) के सैनिकों के विरुध्द चल रहा मुकदमा भी था। उच्च-राजद्रोह के लिए लगभग 23,000 आईएनए सैनिकों के कोर्ट मार्शल, विशेषतः "बिग थ्री" अर्थात् मेजर जनरल शाह नवाज खान, कर्नल प्रेम सहगल और कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लन के कोर्ट मार्शल ने भारतीय सशस्त्र बलों के बीच बडी बेचैनी पैदा कर दी थी। इसकी परिणति 1946 के RIN विद्रोह के रुप में हुई। विद्रोह का चरम बिंदु 21 फरवरी को आया, जब भारतीय नौसेना के इतिहास में पहली बार, आरआईएन युध्दपोत की तोपों को शहर पर ही तान दिया गया था। शाम होने पर ही विद्रोहियों ने संघर्ष विराम का झंडा फहराया। श्री वल्लभभाई पटेल और नेहरु जी के हस्तक्षेप के बाद, 25 फरवरी को यह विद्रोह समाप्त हुआ।

Hindusthan Standard

INDIAN SAILORS IN REVOLT

SIX HOURS BATTLE WITH BRITISH TROOPS

GRAVE TURN IN R.I.N. MEN'S STRIKE IN BOMBAY

TWENTY SHIPS CAPTURED

FIRING ON STRIKERS AT KARACHI

INDIANS RETALIATE WITH NAVAL GUNS

यह संयोग ही था कि RIN विद्रोह के सप्ताह के दौरान ही ब्रिटिश प्रधानमंत्री मिस्टर क्लेमैंट एटली ने घोषणा की थी कि वह भारतीय संविधान सभा की स्थापना के गतिरोध को तोड़ने हेतु भारत में एक कैबिनेट मिशन भेजेंगे। इस अंतिम कैबिनेट मिशन के आगमन ने भारतीय स्वतंत्रता की उलटी गिनती शुरु कर दी।

(साभार - सिफ्रा लेंटिन, बॉम्बे हिस्ट्री फेलो, गेटवे हाऊस)

अनुवादकः पद्माकर कुशवाहा/निदेशक

"इतिहास में शायद ही कभी, पर वो क्षण भी आता है, जब एक युग खत्म होता है"जब किसी देश की लंबे समय से दबी हुई आत्मा को मुक्ति मिलती है; और जब हम पुराने से नए की ओर कदम बढ़ाते हैं।"

-महात्मा गांधी

पूजा नही कुछ काम करो

क्या होगा पूजा वंदन से।
मस्तक पर रोली चन्दन से,
भजन कीर्तन अवलंबन से,
ढोल मंजीरे झांझ बजा,
मांग रहे किस नंदन से,
पूजा के दिन बीत गए
वक्त की कुछ पहचान करो।

पूजा नहीं कुछ काम करो।।

जहाँ जीवन भर रहते हो,
उस जग को बंधन कहते हो,
आखिर स्वर्ग कहाँ तुम्हारा
जिसे सच्चा घर कहते हो,
जिसका कोई अस्तित्व नहीं,
उसको पाने की झूठी आशा में
मन को मत परेशान करो।

पूजा नहीं कुछ काम करो।

नहीं जरुरत हमें देव की,
जो पानी कभी बरसाता था,
अब वह मानव नहीं रहा,
जो तडित् देख डर जाता था।
जिसने आकाश को लाँघ धरा,
क्या वो देवो से कम है?
तुम भी अर्जित विज्ञान करो।

पूजा नहीं कुछ काम करो।।

खोज सका न अपने अन्दर,
वह मंदिर में क्या पाएगा,
खुद को बड़ा समझने वाला,
क्या भक्त कभी बन पाएगा
सब से बड़ा पुजारी श्रमिक,
जो जुटा खेत-खलिहानों में,
उसके श्रम का सम्मान करो।

पूजा नहीं कुछ काम करो।।

सुश्री रचना जयपाल सिंह, उपनिदेशक

"हमें खुद पर पूरा भरोसा चाहिए। हम तभी सफल हैं जब हम अपने प्रयासों पर विश्वास करें। राष्ट्र स्वयं से ही बनते हैं। "
- लाला लाजपत राय

लॉकडाऊन पर आधारित

"मुंबई मेरी जान"

मैं घायल हूँ हौसला हिला नहीं,
मैं मुंम्बई हूँ रेत का किला नहीं।

लोकल बन्द हैं, मेरी धमनियाँ थीं,
बाजार बंद हैं, मेरी रमणियाँ थीं,
सड़कें सुनसान हैं, चलती गाडिय़ाँ थीं,
रुक गया हूँ एक मोड़ पर जान से प्यारा है,
मेरा मुम्बईकर।
मुसीबत से हार जाऊं सबक ऐसा मिला नहीं,
मै मुंबई हूँ रेत का किला नहीं।

सैलाब में डूबा हूँ मगर रात भर चला हूँ मैं,
धमाकों से दहला हूँ मगर गिरकर संभला हूँ मैं,
आतंक की गोलियाँ है चली सीने पे झेला हूँ मैं,
महाराष्ट्र का मुकुट हिंदुस्तान की शान हूँ मैं,
प्रगति और उन्नति की पहचान हूँ मैं,
बुरे वक्त का चलता लम्बा सिलसिला नहीं,
मैं मुम्बई हूँ, रेत का किला नहीं।श्री

मंजर

बिकते थे पहले ईमान,
इंसानियत बिक रही, अब बाजा़रों में।

लाचार माँ हो या बेटा,
खरीद रहा ऑक्सिजन हजा़रों में।

दवा न सही, दुआ है मेरी,
अपना भी है, कोई बीमारों में।

सरकार को दोष दें,
या अपनी किस्मत कोसें,
लाश भी हक मांगे, कतारों में।

मैं हूँ न,
फक्त आवाज दे देना,
दूर ही सही,
थोड़ी परवाह कर लेना,
हिम्मत की लौ जलेगी, अंधियारों में।

श्री विजय भूषण (व.ले.प.अ.)

एक बेटी की कहानी

"पापा कल स्कूल की फीस भरने की आखरी तारीख है" रेणु के शब्द जैसे मेरे कानों में अब भी गूंज रहें हों। उसे कान्वेंट (convent) स्कूल में मैं पढ़ा तो रहा था पर मेरी वित्तीय परिस्थिती मुझे इसकी आज्ञा नही दे रही थी। रेणु मेरी इकलौती बेटी थी और पढने में बहुत होशियार थी। हमारा सपना उसे डॉक्टर बनाने का था, जिस तरह से वह पढ़ाई कर रही थी, मेरा पूरा विश्वास था कि वह हमारा सपना साकार कर देगी।

टेलरिंग की नौंकरी में अब उतने पैसे नहीं मिलते कि हाथ खोलकर खर्च कर सकूँ, दो जून की रोटी का इंतजाम करने में ही मेरी हाय तौबा मच रही है। ऊपर से बेटी के स्कूल का महंगा खर्च! फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारा था। अपनी बेटी को तो मैं डॉक्टर बनाकर ही दम लूँगा।

मैनें अपने सेठ से कुछ और पैसे मांगने की हिमाकत की तो उसने साफ मना कर दिया "कुछ तो शर्म करो, तुम्हारी तनख्वाह की पांच गुनी रकम तुम पहले ही एडवांस के तौर पर ले चुके हो। फिर पिछले साल का लिया दो लाख रुपए तो लौटाने का नाम ही नहीं ले रहे हो। फिर और कैसे दे दूँ तुम्हे, माना कि तुम अच्छे कारीगर हो पर तुम पर मैं और पैसा नहीं लगा सकता, मुझे तो तुम बख़्श ही दो।

मुझे कुछ और ना सूझा। मैं अपने पुराने डॉक्टर के पास गया और फिर से उनसे गुहार लगाई। डॉक्टर साहब बड़े नेक इंसान थे। दो बातें सुनाते जरूर थे पर मेरा काम कर देते थे। आज भी उन्होंने मुझे निराश नहीं किया। मैं फूला नहीं समाया। आज अपनी बिटिया को, उसके फीस के पैसे दे सकूँगा।

डॉक्टर के यहाँ से पैसे लेते ही मैं सीधे घर पहुँचा। मुझे देर हो गई थी और मेरी रानी बिटिया नींद के आगोश में जा चुकी थी। पत्नी ने यूँ मुझे बिटिया को निहारते हुए देखा तो बोली "आपकी राह देखते देखते सो गई। कह रही थी पापा मेरे फीस के पैसे लेने गए होंगे इसलिए देर हो रही है।"

खाने पर बैठे तो पत्नी ने प्रश्नसूचक नजरों से मेरी तरफ देखा। मैं जानबूझकर उसे अनदेखा कर रहा था। आखिर उससे रहा नहीं गया "पैसे कहाँ से लाए?"

"अरे वह डॉक्टर साहब ने दिए," मैंने भी नज़रें चुराकर उसका जवाब दिया।

पत्नी ने तपाक से मेरा हाथ पकड़कर देखा, सुई के निशान मौजूद थे।

"फिर अपना खून बेचकर आए हो?"

मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था। उससे मैं झूठ भी नहीं बोल पाता था। मैं चुप ही रहा।

वह एकदम मायूस हो गई "कहे होते तो मैं ही अपना खून दे आती।"

अरे कैसी बातें करती हो? तुममें खून की कमी है और डॉक्टर साहब ने तो तुम्हे दवाइयाँ भी लिखकर दी.."बोलते बोलते मैं रुक गया.

पत्नी मेरा दर्द समझ गई। तपाक से बोली "अरे दवा खाने से कोई खून बढ़ता है क्या? यह तो अच्छा खाना पीना करेंगे तो अपने आप खून बढ़ जाएगा। फिर अगले पांच साल में हमारी बेटी डॉक्टर हो जाएगी तो फिर दवाइयों की क्या कमी रहेंगी हमें." और वह बात को हंसी में टाल गई।

हमारी गरीबी का आलम यह था कि ठीक से ना खाने की वजह से पत्नी अनेमीक (anaemic) हो गई थी और मैं उसके लिये दवा भी नहीं ला पा रहा था। पर हम पति पत्नी इसमें खुश थे। हमारी बिटिया को डॉक्टर बनाने के लिए यह दौर भी हम गुजार लेंगे।

यूं ही समय बीतता गया. बिटिया अव्वल नंबरो से उत्तीर्ण हुई। पूरे जिले में वह प्रथम आई थी। सरकारी कोटे में उसका MBBS में प्रवेश भी हो गया। स्कॉलरशिप भी मिल गई थी। पर फिर भी कुछ ना कुछ छुटपुट खर्चे कॉलेज वाले मांग ही लेते थे।

खैर, जैसे तैसे जोड़ तोड़ कर बिटिया लास्ट इयर में पहुंच गई और आखिरी समय में फिर भगवान नें हमारी परीक्षा ले ही ली। कॉलेज में कुछ अस्सी हज़ार रुपऐ मेरे लिए पहाड़ समान थे। पर यह शायद आखिरी जोड़ तोड़ होगी, अब बिटिया डॉक्टर बन ही जाएगी, फिर कोई मलाल नहीं रहेगा। बिटिया भी मन लगाकर पढ़ रही थी। सारे अध्यापक डॉक्टर उसी प्रशंसा करते थे।

मैं दिन रात अस्सी हजार रुपए जुटाने में लग गया, पर फिर वही ढाक के तीन पात। मुझे कहीं से भी रुपया नहीं मिला। इस बार तो डॉक्टर साहब नें भी हाथ खड़े कर दिए थे। मै हताश हो गया। डॉक्टर साहब के सामने खूब रोया गिड़गिड़ाया।

"तुम खून बेचकर इतने पैसे नही पाओगे, यह बात समझ क्यों नहीं रहे हो?" डॉक्टर साहब ने समझाया।

"कुछ भी करो डॉक्टर साहब, मुझे किसी भी तरह अस्सी हजार रुपए दिला दो। इसके बाद शायद मुझे यह सब करने कि जरुरत ही नहीं पड़ेगी मेरी बिटिया अब तो डॉक्टर बन जाएगी, फिर तो मै वह टेलरिंग वाली नौकरी भी छोड़ दूँगा।"

"डॉक्टर साहब ने मुझे सांत्वना देते हुए कहा ठीक है, कल आओ मैं कुछ करता हूँ।"

मैं दूसरे दिन फिर डॉक्टर साहब के पास पहुँचा। डॉक्टर साहब कुछ कठोर मुद्रा में जान पड़ते थे, मेरे जाते ही उन्होने मुझे बडे धैर्य और धीरज से अपने कैबिन मैं बिठाकर करीब आधे घंटे तक समझाते रहे। पर जब उन्होंने देखा कि मैं अपनी बिटिया के फीस के लिए किसी भी हद तक जाने को राजी हूँ तो वह भी मान गए।

घर पर पत्नी को फोन करके बता दिया कि आने में देरी होगी, मेरा इंतज़ार ना करे। कंपनी में ओवरटाइम कर रहा हूँ। पत्नी भी मान गई।

दो दिन बाद जब मैं घर लौटा तो बिटिया के हाथ में तुरंत वह अस्सी हजार रुपए दिए और बिस्तर पर थक कर लेट गया। पत्नी को कुछ शक हुआ। बिटिया के जाते ही तुरंत पूछ बैठी "सेठ ने दिए पैसे?"

"हाँ." मैं नजरें चुराते हुए बोला,

"मेरी तरफ देखकर जवाब दीजिए" पत्नी आशंकित हो गई थी।

"हाँ" मैं भी चिढक़र बोला।

पत्नी के आँसू निकल आए बोली "सच सच बताइए, इतने पैसे कहाँ से लाए? कोई गलत काम तो नहीं ना किया आपने?"

"पगली तुझे क्या लगता है? मैं पैसे कमाने के लिए कोई गलत रास्ता अपनाऊंगा क्या?"

"तो फिर सच सच बताइए इतने पैसे आए कहाँ से? दो दिन से आप घर भी नहीं आए?"

"चल अब मुझे आराम करने दे। बहुत थक गया हूँ." मैने प्रश्न को टालना चाहा।

"ठीक है, कम से कम हाथ मुंह धो लो" कपड़े तो बदल लो। पत्नी अब भी संशयित थी।

मैं अंदर कपड़े बदल ही रहा था, इतने में पत्नी चाय लेकर अंदर आयी। मुझे देखते ही चाय का प्याला उसके हाथ से छूट गया। हाय दैय्या! यह आपके पेट के बगल मे टांके क्यों लगे हैं?

वह तपाक से मेरे पेट के दाहिने ओर लगे टांके को करीब से देखने लगी। मै, उससे अब और कुछ छुपा ना सका। पैसों के लिए डॉक्टर साहब नें ही मदद की है।

पर यह टांकै कैसे? पत्नी असमंजस में थी सच सच बताइए क्या हुआ है? वरना मेरा मरा हुआ मुंह देखिएगा।

अरे बेकार ही परेशान हो रही हो, कुछ भी तो नहीं हुआ है। मैने पत्नी को दिलासा दिया। पर वह मानने को ही तैयार नहीं थी। मैने अपनी एक किडनी दान कर दी है। बहुत जरुरतमंद लोग थे। डॉक्टर साहब ने कहा कि एक किडनी से आदमी अपने सभी काम कर सकता है। फिर उस दान के बदले में मुझे अस्सी हजाऱ मिल रहे थे। इसलिए मैं मना नहीं कर सका, मैं एक ही साँस में सब बोल गया।

पत्नी अवाक् होकर सुनती रही!

“यह क्या कर दिया आपने?” उसके सब्र का बाँध फूट पड़ा। उसको बड़ी मुश्किल से चुप कराया। बिटिया की पढ़ाई के आगे वह भी मान गई कि मेरा किडनी बेचने का कृत्य गलत नहीं था।

समय बीतता गया। मेरी तबियत कुछ कुछ खराब ही रहने लगी। पर हम पती-पत्नी ने बिटिया तक कभी यह बात पहुँचने नहीं दी कि उसके पढ़ाई के पैसे कहाँ से और किन परिस्तिथियों में आते हैं। उसे सिर्फ इतना पता था कि माँ और पिताजी दिन रात एक करके मेहनत करते हैं और उसकी पढ़ाई के लिए पैसे जुटाते हैं।

बिटिया की परीक्षा भी हो गई। वह अव्वल नंबरों से उत्तीर्ण भी हो गई। आज उसको डॉक्टर की उपाधि मिलनी थी। बिटिया ने बहुत जोर दिया की हम भी उसके साथ कॉलेज में चले। पर हम फटे पुराने अवस्था में उसके कॉलेज में जाकर उसको शर्मिदा नहीं करना चाहते थे। फिर मेरी तबियत भी साथ नहीं दे रही थी।

हम घर पर ही उसका इंतजार कर रहे थे। आज हमारी तपस्या फलित होने वाली थी। आज हमारी बेटी डॉक्टर बनने वाली थी। दोपहर तीन बजे से ही हम दरवाजे पर नज़र गड़ाए बैठे थे। आज हमारी बिटिया रानी हमारा सपना साकार करके लौटेगी। वह नन्ही सी बेटी जिसे हमने कई सुख सुविधाओं से वंचित रखा। वह आज हमें परम सुख देने आ रही है। हमारे जीवन के तपस्या को फलित करेगी वह। वह आज डॉक्टर बनकर मेरे घरे के आँगन में आएगी।

“शाम के पांच बज गए, रेणु अभी तक आयी क्यों नही?” पत्नी थोड़ी अधीर और चितिंत होनी लगी।

आती ही होगी, मैने भी उसे सांत्वना दी, दोस्तों से बातें करते देर हो रही होगी। फिर अच्छे नंबरो से पास भी हुई है तो लोग बधाइयाँ भी दे रहे होगें। उसी सब में देर हो रही होगी।

अधीर तो मैं भी हो रहा था कि बिटिया कभी बिना बताये इतनी देर करती नही, खैर, इंतजार करने के अलावा कोई चारा भी नहीं था।

दरवाजे पर नजर गड़ाए हम बैठे ही थे। इतने में एक एम्बुलैंस दरवाजे पर आकर खड़ी हुई। हमारा दिल धक् से रह गया। पत्नी दौडते़ हुए बाहर गई, एम्बुलैंस की तरफ लपका। पर बिटिया रानी कहीं नज़र नहीं आ रही थी। आगे बैठे व्यक्ति से वह पूछती रही कि रेणु कहाँ है? वह क्यों नही आयी? पर वह व्यक्ति गमगीन मुद्रा में एम्बुलेंस से उतरा और एम्बुलेंस के पीछे का दरवाजा खोला, उसमें से दो आदमी एक लाश स्ट्रेचर पर लेकर उतरे और दरवाजे पर रख दिया।

मैं भी हतप्रभ सा यह देख रहा था। लाश पूरी तरह चादर से ढकी हुई थी। उस व्यक्ति ने मेरी तरफ देखकर मेरा नाम पूछा फिर एक कागज आगे बढाकर हस्ताक्षर करने को कहा। रेणु ने आत्महत्या कर ली है।

मुझे मेरे कानों पर विश्वास नहीं हुआ। पूछने पर वह व्यक्ति बोला “रेणु का कॉलेज के ही एक लडक़े के साथ प्यार चल रहा था। पर उस लड़के ने रिजल्ट लगने के बाद रेणु को साफ़ साफ़ मना कर दिया कि उसे कोई प्यार व्यार नहीं है। रेणु के साथ वह सिर्फ टाइम पास कर रहा था। रेणु काफी भावुक लड़की थी। उस लडके के ना मानने पर, आज दीक्षांत समारोह के पहले ही, उसने उस लडक़े के सामने आत्महत्या कर ली। मैं और मेरी पत्नी ठगे से एक दूसरे की तरफ देख रहे थे। जिस बिटिया रानी को हमने पाल पोसकर इतना बड़ा किया। अपनी आहुतियाँ देकर पढ़ाया, लिखाया, डॉक्टर बनाया। वह एक धोखेबाज लड़के के प्यार की खातिर अपने माँ बाप की आहुतियों को नज़र अंदाज करके, उनके सपनों को साकार होने से पहले ही, चकनाचूर करके, अपना अंतिम फैसला ले चुकी थी।

श्री. राजेश सिंह (व.ले.प.)

सुश्री हरिप्रीता
भगनी सुश्री वाणी विशालाक्षी / व.अनुवादक

सुश्री हरिप्रीता
भगनी सुश्री वाणी विशालाक्षी / व.अनुवादक

“एक व्यक्ति की तो मृत्यु हो सकती है; लेकीन उसके विचार, व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी, एक हजार मानव-रुपों में प्रकट हो जाएँगे।”

- सुभाष चंद्र बोस

रियायत की किश्त

कोई मोटरगाड़ी लेता है, कोई मकान लेता है,
तो कोई घर के लिए साजो-सामान लेता है।
मगर कभी सुना है आपने कि किसी ने दर्द उधार लिया हो,
या यूँ कहें कि किसी ने दुःखों से करार किया हो?

आप सोच रहे होंगे ये सवाल करने वाला पागल है,
नहीं साहब ! दरअसल वह हताश और घायल है।
दुःखों ने उसके घर ऐसा डेरा डाला है,
सुबह दर्द तो शाम को ग़म ही उसका निवाला है।

ऐसा नहीं है कि उसकी कोई चाह थी ऐसे जीवन की,
बल्कि यह तो नियति थी उसकी, इच्छा थी भगवान की।
वह लाख मनुहार करता रहा, कृपा करो
इतनी मुसीबत मत दो,
नीली छतरी वाले ने अहसान किया,
बोला, चाहो तो थोड़ी रियायत ले लो !

उस दिन से साहब, वह रियासत की किश्त चुकाता है,
एक दुःख झेल जाता है, फिर दूसरा चला आता है।
दर्द की सुई मानो पतली से मोटी होती जा रही है,
चमड़ी को भेद कर अब हड्डी तक घुसी आ रही है ।

वह यही सोचकर कि उसके ख़त्म होने से
पहले उधार खत्म हो जाएगा,
एक दिन वह भी बिना झिझके खुल कर मुस्कुरायेगा ।
उम्मीद का दामन थाम कर वह सब्र सीखता जाता है,
ख़िज़ाँ के मौसम में भी वह "सौरभ" बन खुशबू फैलाता है।

राखी के दिन आना दीदी

राखी के दिन आना दीदी,
आशीष-सुधा बरसाना दीदी।
भूल कभी जो हो जाये मुझसे,
माफ मुझे कर जाना दीदी।
राखी के दिन आना दीदी ।

रक्षा - सूत्र बांध हाथों में,
माथे पर तिलक लगाना दीदी।
मांगू कुछ जो इठला कर तुमसे,
हौले से दे जाना दीदी।
राखी के दिन आना दीदी।

चाह नहीं बस इस जनम ही,
राखी तुमसे मैं बंधवाऊँ
जैसे भी हो हर जनम तुम,
मेरे हिस्से आना दीदी।
राखी के दिन आना दीदी।

श्री. कुमार सौरभ
डी. ई. ओ.

"अगर मुझे अपनी मातृभूमि के लिए एक हजार बार भी मौत का सामना करना पडे, तो मुझे दुःख नहीं होगा। हे प्रभु! मुझे भारत में सौ-बार जन्म दो, लेकिन साथ ही मुझे यह भी वर दो, कि मैं हर बार मातृभूमि की सेवा में ही अपना जीवन त्यागूँ।"

-राम प्रसाद बिस्मिल

भारतवर्ष

गौर से देखो, भरत का भारत हूँ मै,
मैने देखे हैं एक से एक सिकंदर डूबते हुए।
चन्द्रगुप्त के प्रखर से जलते हुए,
धरा पर लोट कर, वापस लौटते हुए।

धर्म की स्थापना करते, राम को देखा मैंने,
देखा है गीता का ज्ञान देते, कृष्ण को भी।
रग रग मे रावण और कंस बसे थे मेरे,
सबको मिट के, धर्म को रचते देखा मैंने।

सिध्दार्थ को, प्रबुध्द बनते हुए देखा है
मैंने,
और देखा है, वर्धमान का वर्तमान से
मिलते हुए भी।
देखा है हिरण और सिंह को, एक घाट
पर पानी पीते हुए,
तो धर्म और सत्य को फलते फूलते हुए
भी देखा है मैने।

दुर्दांत आक्रान्ताओं का हमला देखा है मैने,
और देखा है, रक्त से रंजित भूमि का टुकड़ा भी मैने।
देखा है वीरों को, मातृभूमि पर शीश आहूत करते हुए,
तो आग में जलती हुई हजारों पद्मिनियों को भी देखा मैंने।

विदेशी मेरी धरती पर, पाश्चात्य का ज्ञान फ़ैलाने आये,
वो ज्ञान नहीं था, वो तो अपना जाल फ़ैलाने आये।
भोले भाले लोग उस जाल को समझ ही ना पाए,
और धीरे धीरे उस माया जाल में खुद को फंसते हुए पाए।

रण की शंखनाद से, भूमि थर-थर काँप उठी,
राष्ट्रवाद की चेतना से, सारी भूमि नाप उठी।
राजा क्या प्रजा सभी उसी धुन में घूम गए,
आजादी के मतवाले मौत की गोद में झूम गए।

वो भारत हूँ मैं, जिसने भगत सिंह सा लाल दिया,
मै ही हूँ वो जिसने आज़ाद चंद्रशेखर को पाल दिया।
अंग्रेजो में जिसने मौत का खौफ डाल दिया,
और आज़ादी के खप्पर को अपने लहू से लाल किया।

मै ही हूँ भरत का जम्बूदीप आर्यावर्त भारतखंड

जो था कभी सिन्धु से हिन्दुकुश तक अटल।
था जो कभी अटक से कटक तक फैला हुआ,
आज है सिर्फ छोटे से भूभाग में सिमटा हुआ।

आर्यों का आर्यावर्त हूँ मै, वेदों का ज्ञान बताता गया,
विश्व को वसुधैव कुटुंबकम का तंत्र बताता गया।
सत्य सनातन धर्म का यन्त्र बताता गया,
धीरे धीरे जगतगुरु बनने का मन्त्र बताता गया।

श्री. आदित्य कुमार
व.ले.प

"मन की स्वतंत्रता ही वास्तविक स्वतंत्रता है। एक व्यक्ति जिसका मन स्वतंत्र नहीं है, भले ही वह जंजीरों में न हो, एक गुलाम ही है, स्वतंत्र व्यक्ति नहीं। जिसका मन मुक्त नहीं है, भले ही जेल में न हो, वह एक कैदी है, स्वतंत्र व्यक्ति नहीं। जिसका मन जीवित होते हुए भी मुक्त नहीं है, वह मृत से श्रेष्ठ नहीं है। मन की स्वतंत्रता ही किसी के अस्तित्व का प्रमाण है। "

- बी आर अम्बेडकर

मैं इधर! तुम उधर

सरकारी नौकरी का स्वर्ण मुकुट
धारण करके बैठी हूँ मैं इधर
मेरा परिवार किधर?
परिवार रुपी गाडी के दो पहिये हैं हम
अब परिवार चला रहे हो अकेले ही तुम।

एक साथ थे हम ....
हर दिन त्योहार था तब ....
अकेले हैं हम ....
त्योहार भी बेकार है अब...............
भार ढो-ढोकर तुम हो रहे हो क्षीण,
असहाय खडी हूँ मैं दुःख में लीन

सीख लिया है तुमने गम को छुपाना
थके बिना अपना कर्तव्य निभाना।
पानी में मछली के आंसू नहीं दिखते।
अर्धांगिनी हूँ मैं तुम्हारी व्यथा तो समझती।
तेरे दुःख कैसे मिटाऊँ क्या करूँ।
मैं इधर................ तुम उधर..........

तू ने मुझे माँ पुकारा,
मन में भरा उजियारा,
माँ से बिछड़े अनुज का बन गया सहारा।
ऑनलाइन क्लास का अलार्म है तू!
होमवर्क सिखाता गुरु है तू!
दूध पिलाया............. साइकिल सिखाया.....
उल्टी पोछी......... दवा खिलाया......
माँ की यादों में रोते छोटू के
आंसू पोंछते-पोंछते भैया से तू माँ बन गया
उभरती मूंछ बोल रही हैं तू बन गया किशोर
सही गलत दो रास्ते हैं.... तुम्हे जाना है किस ओर
तेरे वसंतकाल में वनवास पर है तू उधर.......
अपराध बोध में तडप रही हूँ मैं इधर......
क्या करूँ मैं इधर...... तुम उधर ....

है मेरी आँखों का तारा,
तू है बहुत दुलारा,
जब भी सोचूँ तेरे बारे में,
आँखें भर जाती अपने आप में,
वाक्चातुर्य में तूफान है तू......
नटखटपन का डेटाबेस है तू....
प्रश्नों के तीर मारनेवाला अर्जुन है तू,
बाण शय्या पर लेटने योग्य भीष्म नही हूँ मैं,
तेरी चुम्बन की आवाज़ मेरे कानों में गूंजती रही है,
मेरे गाल का गीलापन सूखा भी नही है।

बार बार याद आती तेरी मुस्कान,
माँ की गंध पर तूने दिया विशेष पहचान,
तेरे नन्हे नन्हे हाथों से गले लगाकर,
तेरे और मेरे चेहरे मिलाकर,
सो जाता था तू लोरी और कहानी सुनकर,
गुस्से में मुझसे ही मार खाकर,
रोता था तू मेरी ही नाईटी पकड़कर,
नन्हे हांथों से खाना खिलाया,
तुतला-तुतलाकर लोरी भी सुनाया ।

"खाना भी कम करूँ,
स्नैक्स भी न पूंछूँ,
ऑफिस न जाना,
"माँ तू वापस आ जाना"
यही सुनाता है मेरा छोटू,
मन कर रहा है झट से तेरे आंसू पोंछू,
क्या करूँ ...... मैं इधर ...... तुम उधर.....

स्थानान्तरण की सुनामी ने
बिखेर दिया हमें एक-एक कोने पर,
परिवार चला रहे हम विडियों कॉल पर,
मेरा गीला तकिया बोलेगा इस माँ की कहानी,
सरकारी नौकरी का स्वर्ण मुकुट पहनी हुयी महारानी,
मै इधर..... तुम उधर.......

मेरा परिवार है किधर?

दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं,
दुःख तो बिलकुल टिकेगा ही नहीं,
यह भी बीत जायेगा,
अच्छा दिन भी आएगा,
एक दिन हम सब मिलकर रहेंगे,
इसी आशा में हम आगे बढ़ेंगे......

सुश्री वाणी विशालाक्षी, पी.जे
वरिष्ठ अनुवादक

कु.आदित्य रॉय
भतीजा सुश्री बीना रॉय/कनिष्ठ अनुवादक

"जो भी व्यक्ति विकास के लिए खडा है, उसे हर एक रुढिवादी चीज की आलोचना करनी होगी, उसमें अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी।"

- भगत सिंह

महानिदेशक (केन्द्रीय) मुंबई कार्यालय में लिपिक/टंकक के पद पर आसीन सुश्री कर्मा मीना जिनका जन्म स्थान जयपुर (राजस्थान) है ने खेल शिक्षा निदेशालय, जी.एन.सी.टी. दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा बैडमिंटन प्रतियोगिता 2020-21 में आर.एस.बी मुंबई यूनिट की ओर से प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीतकर अपनी टीम एवं इस कार्यालय को गौरवान्वित किया है।

सुश्री रुचिता सुनिल खोत
पुत्री श्री सुनिल खोत

श्रेष्ठता प्रमाणपत्र वितरण समारोह 2021 की झलकियाँ

श्रेष्ठता प्रमाण पत्र वितरण करते श्री पद्माकर कुशवाहा
(निदेशक-आर-ए-२)

श्रेष्ठता प्रमाण पत्र वितरण करते श्री विवेक सांभरिया
(निदेशक-आर-ए-1)

श्रेष्ठता प्रमाण पत्र वितरण करते हुए श्री पी. के. लालू
उपनिदेशक (सी एण्ड ऐ बी)

श्रेष्ठता प्रमाण पत्र वितरण करते हुए सुश्री रचाना जयपाल सिंह उपनिदेशक (प्रशासन)

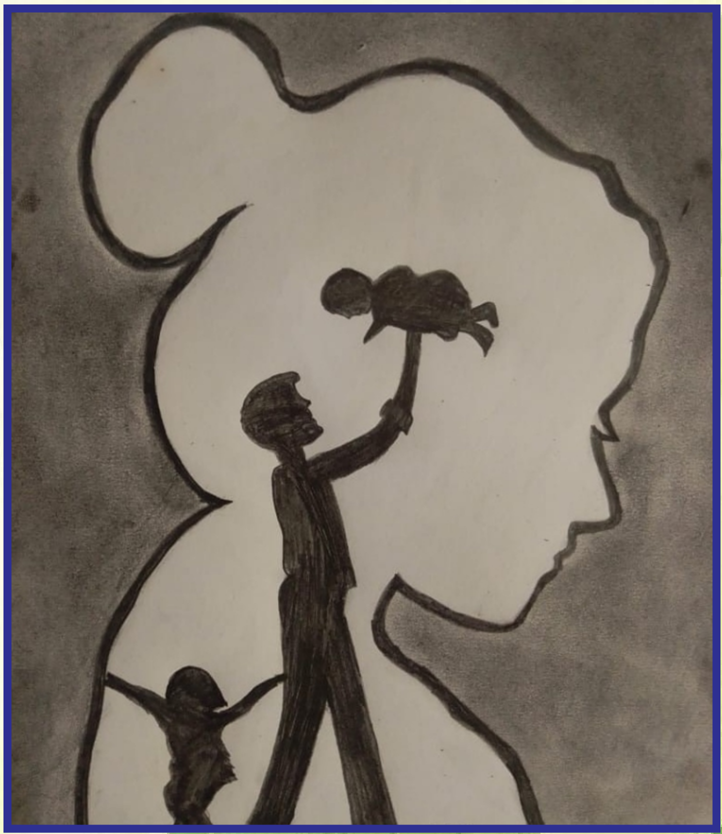

सुश्री अंजलि

भतीजी सुश्री बिना रॉय, कनिष्ठ अनुवादक

किस्से "कोरोना काल" के

मार्च 2020, देशभर में कोरोना महामारी के कारण लॉक डाउन सरकार द्वारा जारी किया गया। घर के सभी काम जैसे बर्तन मांजना, झाड़ू-पौंछा करना, खाना बनाना अपने कन्धों पर आ गया। मेरे काम में पति महाशय भी हाथ बँटाने लगे। लेकिन उससे काम कम और मुसीबत ज्यादा लगने लगी।

एक बार पतिमहाशय चाय बनाने लगे। यह संवाद देखिए। चायपत्ती कहाँ है? शक्कर कहाँ है? मैने डिब्बे कि तरफ निर्देश किया। तीसरा सवाल आया, अदरक कहाँ है? बाद में और सवाल, अदरक कूटने के लिए बट्टा कहाँ है? दूध गरम करके डालूं या ठंडा? बाप रे बाप । स्थानीय लेखापरीक्षा रिपोर्ट सबमिट करने के लिए भी इस से कम प्रश्नावली होगी। आधे घंटे के बाद मेरे सामने चाय आयी। हाय हाय। इतने समय में चाय और नाश्ता भी बना लेती। लेकिन मैंने कुछ टिप्पणी नहीं की। क्योंकि मुझे मालूम था जो चाय मिलती है वह भी बंद हो जाएगी। मैने जी भर कर चाय की तारीफ की।

चक्कियां बंद होने के कारण रोटी बनाना बड़ा ही मुश्किल काम था। "नरम नरम रोटी का वादा स्पेशल फ्रेश आटा" यह विज्ञापन देखकर मैं मॉल से तैयार आटा लेके आयी। इसका विज्ञापन किसी सिनेस्टार ने किया था। लेकिन हाय राम । वह रोटियाँ ठन्डे होने के बाद सास के मिजाज की तरह इतनी कड़क हो जाती थीं कि दांत से तोड़ना नामुमकिन हो जाता था। तभी मुझे साक्षात्कार हुआ कि सिनेस्टार किचन में जाते ही नहीं हैं।

मैने यू-टयूब में देखकर रसोईघर में तरह तरह के व्यंजन बनाने शुरु कर दिए। लेकिन जब दोपहर का खाना 4 बजे तक भी नहीं बन पाया तब पतिमहाशय की डांट सुनने के बाद मेरे होश ठिकाने आ गए। "दाल रोटी खाओ, प्रभु के गुण गाओ" यह गाना गुनगुनाते हुए मैने पारंपरिक सब्जी रोटी बनाना शुरु कर दिया। जो खाना वक्त पर मिले वही दुनिया का सबसे स्वादिष्ट खाना होता है, इसका मुझे एहसास हुआ।

लॉकडाउन थोडा़ खुल गया। सरकार ने सुबह 7 बजे से 11 बजे तक आवश्यक चीजों की दुकानें खुली रखने का फैसला किया। तब मैं सब्जियाँ लेने के लिए 11 बजने से पहले ऐसे भाग कर जाती थी कि कभी मस्टर पकड़ने के लिए भी कार्यालय में भागी नहीं होउंगी। दोनो हाथों में सामान से भरी थैलियाँ लेकर मैं वेटलिफ्टर की तरह दिखती थी। मुझे ख्याल आया कि मुझे ओलंपिक के वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहिए।

ब्यूटी पार्लर बंद होने के कारण मुझे मेरे हेयर कट की चिंता सताने लगी। लेकिन हार मानूँ मैं कैसे? मैंने घर में ही मेरे बाल इतने अच्छे काटे कि मेरा लुक ही बदल गया। मैंने मेरे पतिमहाशय के भी बाल बढ़िया से काटे और मुझे एहसास हुआ कि भविष्य में मै अच्छी हेयर ड्रेसर बन सकती हूँ।

घर में बैठे मुझे घर के प्रति प्यार आ गया। घर का कोना कोना जो पहले मैंने देखा नहीं था वह मुझसे परिचित हुआ। फ्रिज में मैने अलीबाबा की गुफा की तरह ढेर सारा सामान भरा था उसका अचानक से मुझे पता चल गया । घर ही नहीं बल्कि घर के बाहर के पेड़-पौधों से भी मुझे लगाव हो गया।

मैंने जो स्मार्ट फोन लिया था उसके कितने उपयोग हैं यह अचानक से मेरे समझ में आया। पहले डिजिटल व्यवहार से हिचकिचाने वाली मैं फटाफट बैंक के व्यवहार, ऑनलाइन मनी ट्रान्सफर करने लगी। ऑनलाइन किराना सामान, सब्जियां मैं खरीदने लगी।

पहले ऋषि-मुनि ज्ञान प्राप्ति के लिए गुफाओं में बैठ के सालोंसाल तपस्या करते थे, उसी तरह दो महीने घर बैठने के बाद मुझे आत्मज्ञान हुआ। मेरे अन्दर छिपे हुए कला-गुणों का मुझे अंदाजा हुआ। यू -टयूब में मैं नृत्य के वीडियोस देखने लगी और शीशे के सामने उन अदाओं की प्रैक्टिस करने लगी।

लॉकडाउन में कार्यालय बंद रहने के कारण कर्मचारियों को घर से लैपटॉप पर कार्यालय के कामकाज निपटाने पड़े। इस में सबसे बडी़ मुश्किल महिला कर्मचारियों की हो गयी। सुबह सात बजे से रात के बारह बजे तक जी-मेल, वटस्‌एप देख देख के काम करने से कार्यालय में काम करना ही आसान था, यह लगने लगा। “अनलिमिटेड डाटा” की तरह “अनलिमिटेड ऑफिस आवर्स” होने लगे।

बहू सुबह से लेपटॉप पर व्यस्त है यह देख कर सासू माँ का खून खौलने लगा। घर में लड़ाई, झगडे शुरु होने लगे। बेचारी बहू को घर में “सासू” और कार्यालय में “बास” को संतुष्ट करना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन लगने लगा।

होटल बंद रहने के कारण खाने के शौकीन लोगों की हालत खराब हो गई । “घर की मुर्गी दाल बराबर” ऐसे टोकने वाले लोग “घर की दाल मुर्गी बराबर” समझ कर खाने लगे। कब होटल खुलेंगे और स्वादिष्ट व्यंजन पर टूट पड़ेंगे ऐसा उन्हे लगने लगा।

भक्ति के नाम पर इधर-उधर मंदिरो की सैर करने वाले लोग घर में ही भगवान के फोटो में ईश्वर को ढूंढने लगे।

आशिकों की हालत तो पूछो मत। हसीनाओं के खूबसूरत चेहरे मास्क लगने पर चाँद को घेरे हुए बादल की तरह दिखने लगे। लड़कियाँ उन्हे देखकर मुस्करा रही हैं या घूर रही हैं यह समझना मुश्किल हो गया ।

ऐसे था लॉकडाउन में हाल। दुनिया का अर्थचक्र इस महामारी ने बिगाड़ डाला। कितने निष्पाप की जानें ली। लेकिन मुझे आशा है कि भारत और पूरा विश्व जल्द ही इस से बाहर निकलेगा और यह वसुंधरा फिर से आनंद और उत्साह से खिल उठेगी। इसी पॉजिटिव विचार के साथ मैं मेरे यह कोरोना काल के किस्से समाप्त करती हूँ।

श्रीमती मनीषा वि. कदम/पर्यवेक्षक

“यह देश धर्म, दर्शन और प्रेम की जन्मभूमि है। ये सब चीजें अभी भी भारत में विद्‌यमान है। मुझे इस दुनिया की जो जानकारी है, उसके बल पर दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि इन बातों में भारत अन्य देशों की अपेक्षा अब भी श्रेष्ठ है।”

- स्वामी विवेकानंद

नीम का पेड़

कहते हैं कि हर घर
हर आँगन में
हुआ करता था
नीम का एक पेड़।

गवाह था वह
घर के बाशिन्दों के
हर सुख-दुःख
और तीज-त्योहारों का ।

ससुराल जाती बेटी गले मिलती थी
जाते समय उससे
और था वह
घर का वैद्य।

आगे आने वाली पीढ़ियां
शायद मोबाइल की चमकती स्क्रीन पर ही
देख पाएँगीं
नीम का पेड़।

हम-तुम

इस सर्द मौसम में
न जाने क्यों ?
लौट आती है
फिर-फिर कर तुम्हारी याद ।

बस ! वही तस्वीर है
मेरी इन आँखों में।
दिसम्बर के महीने में
काली शॉल में लिपटी हुई
उजली-उजली सी तुम
पूछ रही थी मुझसे
कभी किसी को प्यार किया है?
और मुस्कुरा दिया था मैं।

हर साल यूँ ही दिसम्बर आता है
और पोटली में भरकर
लाता है तुम्हारी यादें
भर जाती है झोली मेरी
एक प्रेमिल एहसास से।

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

ओ कोरोना कब जाएगा तू।

तेरे कारण जिन्दगी की गाडी.
रुक सी गई है
सांसों की मोहताज हुई जिन्दगी
मास्क ने सबका दम घोट रखा है
सैनीटाईज़र के इस्तेमाल से
हाथ हो रहे हैं रुखे सूखे
जीवन को पटरी पर कब लायेगा तू
ओ कोरोना कब जायेगा तू....
अपनों से मिलना हुआ है मुश्किल
मुसीबत बना है सफ़र करना
राह में कब कैसे वायरस लग जाए
इसी डर से लोग घबराए हैं
और कब तक हमें डराएगा तू?
ओ कोरोना कब जाएगा तू...

सुश्री बिना कुमारी राय
क.अनुवादक

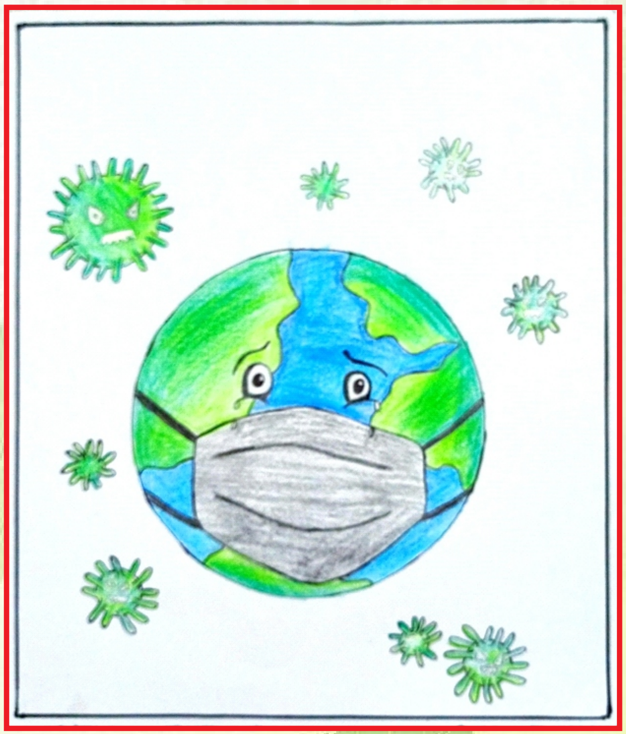

श्री प्रथमेश डोडमानी
पुत्र श्री लक्ष्मण डोडमानी / व.ले.प

सुश्री हरिप्रीता
भगनी सुश्री वाणी विशालाक्षी / व.अनुवादक

हिंदी का रुदन

मै मर रही हूँ बेमौत, कोई दवा दिला दो मुझे,
न सजाओ मेरी अर्थी, अभी कुछ साँस हैं बची
मेरा ही प्रेम पाकर तुमने ली अंगड़ाई,
तुम्हारे पूर्वजों ने सेवा में कसर न उठाई,
फिर तुमने इस कदर, क्यों ठुकराया है मुझे।
न सजाओं मेरी........

जिन्हे थी चाहत मेरी, वे बन गए पतंगे,
की नहीं परवाह मौत की खून से सीने रंगे,
हाय ! अब गए छोड़, भंवरो के सहारे मुझे।
न सजाओं मेरी........

जिसने लगाया सीने से उसको दुत्कार रहे हो,
बिठा सौतन को आंगन मैं, मुझे निकाल रहे हो,
बनेगी शान वह तेरी, यही अज्ञान है तुझे
मर रही हूँ बेमौत, कोई दवा दिला दो मुझे।
न सजाओं मेरी........

मेरी रक्षा की सभी नेता, खूब कसम खाते हैं,
सभा बीच बेइज्जत कर, 'शपथ अंग्रेजी में खाते हैं।
माँ को माँ ही कहो, मम्मी कह कर न खिजाओ मुझे,
मैं मर रही हूँ बेमौत, कोई दवा दिला दो मुझे ।
न सजाओं मेरी......

श्री फूल सिंह ढाका
श्री विकास, स.ले.प.अ के ताऊजी

काव्या वर्मा भतीजी
श्री राहुल कुमार वर्मा

"यदि आप सभी गलतियों के लिए दरवाजे बंद कर देंगे तो सच बाहर रह जायेगा ।"

- रबीन्द्रनाथ ठाकुर

अब क्या जश्न मनाऊँ

ढलती शाम थी और बोझिल कदम
पथराती आंखे और टूट चुका मन,
दिन पर दिन और पल दर पल प्रतीक्षा के बाद......
आज उसने जो आवाज दी इस ढलती शाम में...
मन के आवेश जब पिघल के पिघला चुके थे दिल की
सारी उमंग को....... शमा की तरह;
पथारागई थीं आंखें उनकी बाट जोह जोह कर;
तरस तरस के हारी थी आशा-—सुनने उनकी पुकार,
और खत्म हो चुकी थी सारी कामना एक मिलन की..
बह गए थे कई सपने उनके सजदे के...
मुरझा गए थे जूड़े के गजरे कई कई बार... और भीगे
आंचल से उठती थी आंसुओं की महक।

तब तुमने आवाज दी है मेरे दोस्त,
जब बीत चुके हैं मिलन के वादे के वह अंतिम क्षण,
टूट चुके हैं सारे अरमान और कदम बढ़ चले हैं
उलट दिशा में, अंधेरी रात की आगोश में।

मिट चुके हैं सारे सपने...
खाली दामन के बोझ उठाए जकड़ रहा है दिल,
गिरते गिरते ठहर चुकी है जो आंसुओ कि धारा आंखो के
किनारे पर।

तब तुमने आवाज दी है मेरे दोस्त -
कैसा मौका तलाश कर?
तुम्हीं कहो - अब क्या जश्न मनाऊँ?
जब सारी उम्मीदें हो चुकी हों खत्म, खत्म हो चुका हो वो
वजूद जिसके साथ थे तुम जुड़े।

अब क्या जश्न मनाऊँ उस रिश्ते की? जब उड़ चुकी है
उसकी महक कपूर की तरह....... बाकी है
तो राख अस्तित्व की, जो याद दिलाती है बार बार उस
तपिश की.....

जिसमें सुलगते सुलगते राख बन चुके हैं दिल के सारे अरमान मेरे
वजूद को साथ लेकर।

अब क्या जश्न मनाऊँ उस स्वीकृति की इस विलय की बेला में?
तुम्हीं कह दो ये मेरे परिचित, तुम ही बता दो... अब कैसे जश्न
मनाऊँ, आज , इस विलय की बेला में?

सुश्री मंजुला महाराणा, व.ले.प.अ

"अगर अब भी तुम्हारा खून नहीं खौलता है, तो इसका मतलब है कि तुम्हारी नसों में पानी बह रहा है। जो मातृभूमि के काम न आ सके, ऐसे यौवन का क्या फायदा ।"

- चंद्रशेखर आजाद

सपना

कुछ सपनों को अपना कर
हम अपनों से हुए ऐसे दूर-
सपना तो सपना ही रहा
पर उसमें हमारा क्या कसूर ?
अपनों के सपनों को ढोते-ढोते
ढल रही थी जिंदगी,
घड़ी भर लेटे ही थे क्या आंखे मूंदे, सपनों की छाँव मे,
तो जिंदगी हो गयी वीरानी
नित नए अपनों का मेला
लगता था चहुँ ओर कभी-
आज नए विशेषण मिले
"पागल" है और "यह हैं मतलबी"
"रिश्तेवाले न समझे" अब,
तो गैरोंको कोई क्या समझाये?
उनकी समझ और ना-समझ से परे
खड़े होके हम, मुस्कुराये।

विधान ये समाज का देखो -
दाँव पर बार बार लग गये हम.
बचपन हमारा था पर -
खानदान का सपना बने थे हम।

तरुणाई ऐसी बीत गई, बचपन के सपनों को ढोते-ढोते
और जवानी का अंतिम चरण बीता
आत्मजों के लिए अपने सपने बुनते।

जिंदगी के प्रदोष में आज
सिर्फ एक सपना हमें भाया,
इस सवाल ने हमें चकराया।

इस सवाल के जवाब का शोध, बना सपना,
और इन आँखो में अपना रंग भर गया

बेगानों के बीच अपनों सा
मेरे सपनों को थामे, मैं मुस्कराया
क्यों ना थाम लूँ इन पलों को ?
अपनों से बौखलाई घबराई सी क्यूँ रहूँ ?
जिंदगी है मेरी अपनी -
दुनिया की तराजू पर कब तक रहूँ।

यह "सपने" हैं मेरे, और मैं सपनों की
अब तो उन सपनों को सीने से लगाये-
जीते जा रही हूँ मैं, अलमस्त,
अपनों के बीच भी, बेगाना सा-
पर, एक नन्हा मीठा मुस्कुराता सपना संजोये।

सुश्री मंजुला महाराणा, व.ले.प.अ

"दुनिया हर किसी की जरुरत के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी एक के भी लालच के लिए पर्याप्त नहीं।"
- महात्मा गांधी

नजरिया

अक्सर हम, बिना पूरी बात या विचार सुने या समझे, दूसरों के सुझावों को गलत ठहरा देते है जबकि यह जरुरी नहीं है कि जो हम देख रहें हैं आम तौर पर जो सर्वमान्य है वह सही ही हो। एक कहानी के माध्यम से कुछ तथ्य प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूँ। कहानी इस प्रकार है।

मोहन रास्ते से जा रहा था। उसके आगे एक साधारण सा व्यक्ति जो देखने में अनपढ़ गंवार प्रतीत हो रहा था, चल रहा था। चलते - चलते रास्ते में एक नाला पड़ा। उस नाले को पार करने के लिए मोहन ने अपने जूते हाथ में ले लिए तथा नाला पार करने के बाद पुनः जूते पहन लिए। उसके साथ-साथ चल रहे दूसरे व्यक्ति ने जूते जो पहले से हाथ में रखे थे पहन लिए तथा नाला पार करने के बाद पुनः निकालकर हाथ में लेकर चलने लगा। दूसरे व्यक्ति का यह आचरण मोहन को आश्चर्य में डाल रहा था लेकिन वह कुछ न बोल सका। थोड़ी दूर जाने के बाद वह पुनः जूते पहनने के लिए तैयार था। दूसरे व्यक्ति ने फिर अपने जूते पहने तथा नाला पार करने के बाद पुनः निकालकर हाथ में लिए। दूसरे व्यक्ति का यह आचरण मोहन को परेशान कर रहा था वह पूछना चाहता था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है? अपनी उत्सुकता को मोहन रोक नहीं पाया तथा उसने उस व्यक्ति से इसका कारण पूछ ही लिया।

उस व्यक्ति का जबाब सुनकर मोहन ने दातों तले अपनी अंगुलियाँ दबा लीं। उस व्यक्ति का जबाब था -"यह जूते मेरे पैरों कि सुरक्षा के लिए है खुले रास्ते पर मै आराम से देख सकता हूँ तथा अपने पैरों को कांटे वगैरह से बचाकर जमीन पर रखता हूँ। परन्तु पानी के अन्दर मै देख नहीं सकता, पता नहीं कब एवं कहाँ मुझे कांटे वगैरह धंस जाएँ।

इसलिए जूते पहनकर पानी को पार करता हूँ जिससे मेरा पैर सुरक्षित रहे।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दोनों व्यक्ति अपने अपने स्थान पर सही हैं। वास्तविकता केवल अपने-अपने सोचने समझने के नजरिये पर आधारित होती है।

श्री मुनिनाथ यादव
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

"गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती। वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है। उसकी खुशबू संदेश है।"

-महात्मा गांधी

टोपी

सामने से आती भीड़ को देखकर महिला ने
अपने सात साल के बेटे का हाथ खींचा
और सड़क के चौराहे के किनारे बने एक
बिजली के ट्रांसफार्मर के पीछे छुप गई।

वह उन्मादी भीड़ जिसने गोल सफेद जालीदार टोपी
पहनी हुई थी, हाथ में तलवार लाठी
लहराते हुए उनके आगे से गुजर गई।
महिला सांस रोके उस भीड़ को जाते देख
रही थी तभी उस चौराहे के दूसरी तरफ से
एक और उन्मादी भीड़ हाथ में तलवार
लाठी लिए, भगवा टोपी धारण किए आई
और एक जोशीला जयघोष करती हुई
उनके आगे से गुजर गई। मां- बच्चा दोनों
सहमे हुए थे। कुछ पल के बाद अचानक
उसी चौराहे की एक सड़क से एक और
भीड़ हाथ में लाठी लिए भागी आ रही थी।
महिला ने भीड़ को देखा, एक गहरी लंबी
सांस ली और अपने बेटे का हाथ और जोर
से पकड़ते हुए उस भीड़ की तरफ बढ़ चली।
बच्चा सहमी हुई आवाज में बोला मां
छुप जाओ, उन्होंने भी टोपी पहनी है"।
लेकिन उसकी मां ने आसमान की तरफ
देखते हुए धीरे से कहा **"बेटा इनकी टोपी का रंग
खाकी है"** ।

श्री. अमित कुमार / डी.ई.ओ.

अगर शाम होती एक इंसान

ऐ सांझ(शाम) तू ठहर जा जरा,
कुछ मेरी सुन, तो कुछ अपनी सुना जा जरा।

कभी फुर्सत मिले तो गौर फरमाना,
लोग कितना खुश होते हैं तुझसे मिलकर मुझे ये बताना,
यूं तो कुछ रोते होंगे,
तो कुछ हंसते भी होंगे,
कोई गुमसुम मिले तुझे,
तो उसे भी गले से लगाना जरा,
कुछ तू उसकी सुन तो कुछ अपनी सुना जाना जरा।

पकड़ हाथ जो तेरा ले कोई,
दस्तक दिल पे जो तेरे दे कोई,
निकलते अश्कों से उसके,
कुछ पूछ जाना जरा,
थोड़ी उसकी सुन तो कुछ अपनी सुना जाना जरा।

मिले जो हम खुश तुझे कभी,
दो जाम साथ बैठकर,
आंखो में आंखे डालकर,
तू भी खुश हो जाना जरा,
कुछ हमारी सुन तो कुछ अपनी सुनाना जरा।

तुझे भी कभी वक्त मिले,
जब खुश तुझे हम सब मिले,
रख सिरहाने तकिए को,
तू भी दो पल सो जाना जरा।

ऐ सांझ(शाम) तू ठहर जा जरा,
कुछ मेरी सुन तो कुछ अपनी सुना जा जरा।

श्री. संजीव कुमार
लेखापरीक्षक

जीवन के सात अनमोल प्रश्न

1. **दुनिया का एकमात्र व्यक्ति कौन है जिसका कहना आपको सुनना ही पड़ेगा?**

परिस्थिति, अपना दिमाग जब किसी परिस्थिति में आवाज देता है, आदमी उस स्थिति को नजर अंदाज कर देता है। वह अपने माता-पिता, गुरु और दोस्तों के कहने पर भी उसे नजर अंदाज कर सकता है, लेकीन जब परिस्थिति बोलती है, तो उसे केवल उससे निपटना होता है और सुनना ही पड़ता है।

2. **मनुष्य का ऐसा शत्रु कौन है जो अदृश्य है परन्तु मनुष्य को बहुत हानि पहुँचाता है?**

महाभारत में धर्मराज से यही प्रश्न यक्ष द्वारा पूछा गया था, और धर्मराज द्वारा दिया गया उत्तर बहुत प्रासंगिक है, क्रोध आने पर भस्म हो जाना निश्चित है, क्योंकि क्रोध मनुष्य की सोचने की शक्ति को नष्ट कर देता है

3. **जीवन में सुख का मूल मंत्र क्या है जो भगवान कृष्ण ने भगवद गीता में कहा है?**

भगवान कृष्ण कहते हैं कि जीवन में खुश रहने के लिए मनुष्य को अपने वर्तमान में जीने की जरुरत है। मनुष्य अपने अतीत के साथ खेलता है, भविष्य की चिंता से ग्रस्त हो जाता है, और वर्तमान में स्थायी रुप से चिंता करना बंद कर देता है। धन्य और सुखी वही है, जो बीते कल और आनेवाले कल में नही, बल्कि केवल आज में रहता है।

4. **गुरु चरित्र में भगवान पाने का क्या उपाय बताया गया है?**

गुरु चरित्र में कहा गया है कि मनुष्य का मन सदैव संशय से भरा रहता है, जब इस संशय को आस्था से बदल दिया जाता है, तो ईश्वर मिल जाता है।

5. **मानव कैसे बनता है?**

भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि मानव आत्म विश्वास से बनता है। जो अपने बारें में और दुनिया के बारे में जैसे विश्वास रखता है उसे वैसी ही दुनिया उसके आजू बाजू मैं खड़ी मिलती है।

6. **कौनसी ऐसी चीज है जिसको धारण करने से हमे अँधेरे में आसानी से चल सकते है?**

ऋग वेद में बोला गया है "ॐ भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं।भर्गो देवस्य धीमहि ।धियों यो नः प्रचोदयात् ।। अर्थात् जीवन का रुप, दुःख का नाश करने वाला, सुख का रुप, पाप का रुप, पापों का नाश करने वाला, तेजस्वी परमात्मा को यदि हम अंतरात्मा में धारण करतें हैं, तो यह हमारे अंतरात्मा में, हमारे जीवन में प्रकाश पैंदा करता है और हमारी बुध्दि को रास्ता दिखाता है।

7. **भगवान को कौन प्रिय है?**

भगवद्गीता के 12 अध्यायों, 19 श्लोकों में कहा गया है कि जो निन्दा-स्तुति का अनुभव नही करता है, जो भगवान के रुप का ध्यान करता है, जो कुछ भी प्राप्त करता है उसके भरण-पोषण से हमेशा संतुष्ट रहता है, जिसका कोई स्नेह या वास नहीं है, स्थिर बुध्दि वाला पवित्र व्यक्ति भगवान को प्रिय है।

श्रीमती रुक्मिणी रामचंद्रन
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

इश्क पनप रहा है

उन तिरछी छुपाती निगाहों से
नजरें मिलाने पर निकली आहों से

उन कागज़ के पास होते चिठ्ठों से
क्लास में फैलते किस्सों से

उन छुट्टी के बाद के गोले से
उस पागल हरफनमौले से

उस निश्छल पावन दिल से
छोटी रेस्टोरेंट के बिल से

उस पगली की नादानी से
दोस्तों की छेड़खानी से

उन सायकिल के लम्बे चक्करों से
जान अनजाने में मारी टक्करों से

इश्क पनप रहा है

श्री. राकेश कुमार सिंह,
स.ले.प.अ.

ये लोग

वे लोग जो नहीं कोसते
डूब जाने पर पानी को
जो नहीं कहते बादलों को बुरा
बैमोसम बारिश मे भींग जाने पर
जो नहीं गरियाते सडक़ के पत्थरों को
ठोकर खाकर गिर जाने पर,
और ना ही खुद को कहते हैं बदकिस्मत
किसी किस्म की आग में जल जाने पर,
जो ईश्वर के होने पर संदेह करते हैं और
शायद इसीलिए विपत्ति में नहीं छोड़ देते
किसी को किसी के सहारे,
जो सबसे पहले पार करते हैं रास्तें
बिल्लियों के काटकर निकल जाने पर,
और सबसे बाद में पुल
नदी में बाढ़ आने पर,
जो बराबर कि मोहब्बत करते हैं
पीली और सफेद़ किस्म कि रोशनियों से
जो चोरी होने के डर से खरीदते हैं ताले
ना कि कट्टे या बंदूकें
जिन्होंने देखी होती हैं सूनामी
पर नफरत नहीं पालते समंदर की लहरों से,
बचाना मुश्किल काम है मालूम हैं मुझे
पर अगर बचे रहे ऐसे लोग तो बचे रहेंगे हम और आप

श्री. अतुल यादव
सुपुत्र मुनिनाथ यादव
स.ले.प.अ.

कोविड - 19

मैं आप सभी को बताना चाहता हूं कि कोविड-19 महामारी के दौरान हमने बहुत से नये शब्दों को पहली बार पढ़ा और सुना है। उनमे से कुछ के बारे में आपको जानकारी देना चाहता हूं।

1. लॉकडाउन (Lockdown): कोलिन्स डिक्शनरी ने 2020 के लिए "लॉकडाउन" को वर्ष के सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द के रुप में घोषित किया। यह बड़े पैमाने पर दुनिया भर के देशों मे लगाए गए प्रतिबंधों का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया था ताकि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमण को फैलने से रोका जा सके और खुद को और दूसरों को भी बचाया जा सके।

2. कन्टेनमेंट जोन (Containment Zone) : COVID-19 महामारी के दौरान आमतौर पर कन्टेनमेंट ज़ोन शब्द का इस्तेमाल किया गया जिसका अर्थ है किसी संक्रामक बीमारी या प्राकृतिक आपदा के विस्तार या प्रसार को सीमित करना। COVID-19 मामलों की बढती संख्या को देखते हुए, सरकार ने वायरस के अवरुद्ध करने के लिए कई उपाय किए, और इन कदमों के बीच लाल, नारंगी, हरे नियंत्रण क्षेत्र के रुप में एक क्षेत्र का सीमांकन किया गया।

3. महामारी (Pandemic) : प्रसिद्ध अमेरिकी शब्दकोश, मरियम-वेबस्टर ने वर्ष 2020 के अपने शब्द के रुप में महामारी की घोषणा की थी। इस शब्द का उपयोग उस बीमारी का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो एक बहुत बड़ी आबादी को प्रभावित करती है, जो एक समुदाय से दुनिया भर के कई देशों में फैलती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा 11 मार्च को कोरोना वायरस महामारी घोषित किए जाने के बाद इस वर्ष शब्द को तत्काल विशिष्टता के रुप में लिया गया था।

4. स्पर्शोन्मुख (Asymptomatic) : इस शब्द का उपयोग उन मरीजों को संदर्भित करने के लिए किया गया था जो संक्रमित है, लेकिन किसी भी प्रकार के लक्षण पेश नहीं करते हैं। COVID-19 के मामले में, एक स्पर्शोन्मुख व्यक्ति को बुखार, सूखी खांसी, गले में खराश, सांस की तकलीफ और शरीर में वायरस के लिए सकारात्मक परीक्षण के समय दर्द दिखाई नहीं देगा, लेकिन इनमें से कुछ व्यक्ति "पूर्व निर्धारित" हो सकते है और अगले कुछ दिनों में लक्षणों का विकास होगा।

5. संगरोध (Quarantine): कैम्ब्रिज डिक्शनरी ने 2020 के लिए क्वांरटाइन शब्द को "संगरोध" के रुप में घोषित किया क्योंकि यह उनके शब्दकोश में सबसे अधिक खोजे गए शब्दों मे से एक है। इस शब्द का अलगाव के समान अर्थ है और पूरे वर्ष में व्यापक रुप से उपयोग किया गया है। संगरोध में उन लोगों को अलग करना और प्रतिबंधित करना शामिल है जो संक्रामक बीमारी के संपर्क में हैं।

6. पी.पी.ई. (Personal Protective Equipment) : एक व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई), एक विशेष कपडे की वस्तु है जिसका उपयोग स्वास्थ्य संबंधी खतरों से बचाव के लिए किया जाता है, जिसमें शारीरिक संपर्क या हवाई कणों के माध्यम से संक्रामक रोगो के संपर्क में आना शामिल है। पीपीई को शरीर के उन हिस्सों की रक्षा के लिए बनाया गया है, जो आमतौर पर नाक, मुंह, आंख, हाथ और पैर सहित सामान्य पोशाक में होते हैं।

7. सहरुग्णता (Comorbidity) : किसी व्यक्ति को सहरुग्णता तब होती है, जब उसे एक से अधिक बीमारी या स्वास्थ्य विकार होते हैं, जिसमे क्रॉनिक किडनी डिजीज, सीओपीडी (क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज), मोटापा, दिल की गंभीर स्थिति और टाइप 2 डायबिटीज जैसी स्थितियां शामिल होती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, COVID-19 के दौरान इलाज के बाद निधन होने वाले 48% से अधिक रोगियों में अंतर्निहित सहरुग्णता थी।

8. सैनिटाइजर (Sanitizer) : यह एक ऐसा पदार्थ या उत्पाद है जिसका इस्तेमाल कीटाणुओं को कम करने या खत्म करने के लिए किया जाता है। डब्ल्यूएचओ के कोरोनावायरस दिशा-निर्देशों के बाद इस शब्द का चलन शुरु हुआ जिसमें उल्लेख किया गया कि कोविड - 19 को रोकने के लिए हाथ धोना और नियमित रुप से हैंड सैनिटाइजर का उपयोग करना महत्वपूर्ण कदम है।

9. डब्ल्यू एफ एच (Work From Home) : यह "घर से काम करने " या घर से काम करने के लिए एक संक्षिप्त नाम है जो कार्यालय के बजाय घर से किए जा रहे काम का वर्णन करता है। COVID-19 के आगमन के कारण संगठनो के बहुमत द्वारा अपनाया गया था ताकि उनके कर्मचारी घर के अंदर सुरक्षित वातावरण में रह सकें और काम कर सकें।

10. सामाजिक-दूरी (Social Distancing) : यह एक और महत्वपूर्ण शब्द है जिसे आमतौर पर COVID-19 युग के दौरान सुरक्षा उपाय के रुप में उपयोग किया गया है। यह शब्द पहली बार 1957 में इस्तेमाल किया गया था जो संक्रमित लोगों और उन लोगों के बीच संपर्क से बचने या कम करने के लिए लागू किया जाता है।

हेमंत, डी.ई.ओ

"क" रोना से "ड" रोना

हे भगवान,
ये हमारे कौनसे पापकी सजा है
जो तूने बिना माँगे करोना भेजा है

जबसे ये आया है
ना हम घर से बाहर जा पाते हैं
ना चैन की सांस ले पाते हैं

जबसे ये आया है
पडोसी का दरवाजा खुला देखकर
हमारा दरवाजा बंद हो जाता है

जबसे ये आया है
बात बात पर हमें
हाथ धोने पड़ रहे हैं

जबसे ये आया है
एक नई सोच
"सामाजिक दूरी"
लेकर आया है

पर अब हम
तुम पर भरोसा रखकर
इसका सामना करना
सीख गए हैं

अब हम इसे
हराकर ही
चैनकी सांस
लेने वाले हैं

अब हमने तय किया है
मुखपट्टी, सामाजिक अंतर
और सैनिटायजर
हमारा बचाव है

हे भगवान,
अब तुम
हम पर अपना साया
ऐसे फैलाओ कि
करोना को खुदको
हमसे चार हाथ
दूर भागना होगा
क्यूं कि
उसे अब यहां पर
बसेरा नामुमकिन होगा

मुखपट्टी, सैनिटायजर
और सामाजिक अंतर
उसे हमसे
दूर भगायेगा

जा करोना
भाग जा
अब तेरा
यहाँ का सफर
खत्म हुआ

जा करोना जा
जा करोना जा
जा करोना जा

सुश्री स्नेहा सुथार
पर्यवेक्षक

मेरी "सोना"

जब मुझे मालूम हुआ कि मैं बुआ बनने जा रहीं हूँ तब ,एक नवीन एहसास हृदय में उत्पन्न हुआ। हालांकि यह पहली बार नहीं था कि मैं बुआ की पदवी प्राप्त करने जा रही थी क्योंकि मैं पहले से ही इस स्थान को प्राप्त कर चुकी थी। परन्तु मेरी सभी भतीजियाँ मुझसे बहुत दूर रहती हैं और उनका जन्म भी मेरे सामने नहीं हुआ था। जैसे जैसे सोना के जन्म का समय पास आ रहा था उत्सुकता और भी बढ़ती जा रही थी इंतज़ार करना बड़ा भारी काम लगने लगा था। उसके जन्म के एक माह पूर्व ही उसके लिए खरीदारी कर ली गई थी। मैं हर दिन अपनी भाभी से पूछती कि और कितना समय लगेगा अब और कितना इंतज़ार करना पड़ेगा।

आख़िरकार वह दिन आ ही गया 22 जनवरी 2008 को दोपहर के करीब 12 बजे सर्दी की ठिठुरा देने वाली ठंडी में सोना का जन्म हुआ। चूँकि सरकारी अस्पताल दोपहर में साफ़-सफाई के लिए बंद कर दिया जाता था इसलिए मुझे बाहर ही काफी समय तक इंतज़ार करना पड़ा। उफ! यह इंतज़ार करना भी कितना उबाऊ काम होता है। जब मै अस्पताल के अन्दर गई तब पहली बार मैने सोना को देखा। तब वो सो रही थी। उसके जागने तक मैं उसे निहारती रही। जब तक उसकी आँखें बंद थीं अंदाजा नहीं था कि इतनी बड़ी-बड़ी आँखें होंगीं। सुन्दर-सुन्दर बड़ी-बड़ी आँखें जब चमकतीं तब दिल खुश हो जाता। मैं पहले दिन से ही उसको सँभालने लगी। घर में सभी सदस्य बहुत खुश थे। सब उसे गोद में लेते और बातें करते। अपनी माँ के पास वह सिर्फ रात को सोती थी क्योंकि सारा दिन तो उसे किसी न किसी के गोद में जगह मिल ही जाती थी। सुबह-सुबह वह तैयार हो कर अपने पापा की गोद में सवार होकर मेरे घर में यानि अपनी दादी के पास चली आती थी। अपने घर का काम निपटा कर भाभी सोना के लिए दूध की बोतल लेकर दोपहर में मेरे घर आती तब तक सोना हमारे पास खेलती रहती और हमारे साथ भोजन भी कर लेती थी। यह सिलसिला करीब तीन साल तक चला होगा।

फिर तो वह स्कूल जाने लगी थी। स्कूल से निकल कर पहले मेरे घर में खेलती फिर अपने घर की ओर रुख करती। बच्चे कितने प्यारें और मासूम होते हैं यह तो सोना के साथ समय बिताने पर ही पता चला, नहीं तो मुझे बच्चे हमेशा बदमाश ही लगते थे।

सोना ने जब बोलना शुरू किया तो उसका शब्द बिलकुल साफ और स्पष्ट था अन्य बच्चों की तरह वह कभी तोतला नहीं बोली। स्कूल के पहले दिन भी वह अन्य बच्चों की तरह रोई भी नहीं। वह बिलकुल हाज़िर जवाब तथा अत्यंत जिज्ञासु रही। हर बात की तह तक जाना ही होता था उसे। अपनी बात मनवाने का भी उसका अलग अंदाज़ था। "मैं रुठूंगी" कह कर फर्श पर पेट के बल हाँथ-पैर परस्पर कर लेट जाती थी और जब तक हममें से कोई उठाकर मनाए नहीं तब तक सोना मानती नहीं थी। सोना को सुबह की नींद बहुत प्यारी लगती उसे जगाने में कम से कम आधा घंटा लगता था। जब वह छोटी थी उसे नहाना बिलकुल पसंद नहीं था, पर अब उसे हर रोज कपड़े बदलने का शौक है। बचपन से उसे मीठा खाना पसंद है। सब्जियो से तो उसका बैर है दूध-दही-पनीर और मिठाई उसकी खुराक है। दुकान में ऐसा कोई चोकलेट नहीं जिसे उसने चखा न हो। हाज़िर जवाबी और जिज्ञासु इतनी कि स्कूल के शिक्षक भी परेशान। किसी क्वेस्चन बैंक से कम नहीं सोना का दिमाग । बातों में कोई उससे जीत ही नहीं सकता। हर बात का जवाब हाज़िर रहता है। अपनी पापा की लाडली है और पापा के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकती। भैया-भाभी के बीच नोंक-झोंक होती है तो हमेशा अपने पापा का पक्ष ही लेती है। अब तो वह बहुत समझदार हो गयी है। अपने सहपाठियों एवं अपने छोटे भाई से पढ़ाई में हमेशा स्पर्धा करती है। आठवी कक्षा में पहुच गई है पर लगता है जैसे अभी भी छोटी है और मन करता है कि उसे गोद में लेके उसके साथ खेलूं। समय कितना जल्दी बीत गया और सोना बड़ी हो गई पता ही नहीं चला। फिर से उसका बचपन देखने की चाह होती है।

सुश्री बिना कुमारी राय
कनिष्ठ अनुवादक

भोजन और जीवन

भोजन हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। पर जितनी विभिन्नता भोजन मे है, कुछ उतनी ही इसे ग्रहण करने की विधि और नियमों में भी है। प्राचीन काल से अनुभव एवं प्रयोगों द्वारा भोजन की सही विधि, मात्रा और इसके अवयवों का निर्धारण करने का प्रयास हो रहा है। भले ही इस प्रक्रिया में कितने सिद्धान्त बने हों पर, उनमें कुछ ना कुछ समानता अवश्य है।

योग कहता है कि आपका शरीर सब जानता है। आपको अपने शरीर की सुननी होगी और उसे ही मानना होगा। यह सही है पर कठिन है। इस साधारण सच को पार करना ही मुश्किल है। क्योंकि लंबे समय तक गलत आदत और गलत जानकारी से कई मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। इससे शरीर की प्राकृतिक मांग कम हो जाती है। ऐसे में व्रत या भोजन की मात्रा कम करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है, ताकि शरीर सही मांग करने लगे।

जानवरों को तो प्राकृतिक भूख लगती है। वे शरीर की भोजन के मांग का पूरा ध्यान रखते हैं, लेकिन हमेशा जरूरत से कम खाते हैं। जानवरो को जब यह लगता है कि शरीर या पेट में कुछ गडब़ड है तो वे उपवास कर लेते हैं। जबकि मानव यदि स्वस्थ नही है तो भी खाने की सोचता है और ज्यादा खा जाता है। बल्कि इसके उल्टा करें और कम खाएं तो शरीर जल्दी स्वस्थ और सामान्य हो जाएगा। शरीर कभी जरूरत से ज्यादा की मांग नहीं करता है इसलिए अगर इसे ज्यादा दिया जाए तो वह इसे स्वीकार नहीं करता और अस्वस्थ हो जाता है।

हमारा शरीर सही मांग करे इसके लिए जरुरी है कि हम शरीर और इसके अंगो को कुछ आराम करने दें।यदि भोजन हमारी स्थितियों के अनुकूल नहीं है तो भी हमारा शरीर इसे ग्रहण नहीं करेगा। हमें अपने आहार के बारे में वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना चाहिए। जैसे कि शारीरिक मेहनत करने वाले के लिए अलग प्रकार का भोजन, बैठ कर काम करने वाले के लिए अलग भोजन इत्यादि। यदि यह अध्ययन सटीक हो गया तो हम बहुत कम मात्रा में भोजन करके भी स्वस्थ रह सकते हैं। स्वाद का संतुलन भी शरीर और दिमाग के लिए अच्छा रहता है और जहां तक हो सके ज्यादा से ज्यादा भिन्न प्रकार का भोजन करना चाहिए। इससे हमारे दिमाग के विकास में सहायता मिलती है।

अतः हमें स्वस्थ जीवन जीने के लिए भोजन की आवश्यकता को पूरा करते समय इसकी विविधता और मात्रा का पूरा ध्यान रखना चाहिए। संतुलित आहार लें, विभिन्न प्रकार का भोजन ग्रहण करें, समय से खाएं अर्थात जब जोरों की भूख लगी हो और उतना ही खाएं कि थोडी़ सी भूख बची रह जाए।

श्री. राकेश कुमार सिंह,
स.ले.प.अ.

नया सपना

मैंने एक देखा था सपना
सारा धन हो गया था अपना
मैं ही था मंत्री और मैं ही था राजा
दरबान खोल रहे थे दरवाजा
दरवाजा खुला, मैं निकला बाहर
पास ही फैली थी एक चादर,
और उसके नीचे था एक कागज।

हवा चली कागज़ उड़ा
दहक रही थी आग जहाँ,
गिरा उसी अंगीठी में।

कागज़ जला, धुंआ उठा
मुझे लगा जैसे मेरा सारा धन भी जल गया
ऐसा भयानक था यह सपना कि मुझको भी जगा दिया
फिर देखा कि मेरी बहन ने
जला डाला मेरा एक कॉपी-नया नया।

आदित्य राय
(भतीजा सुश्री विना कुमारी राय/क. अनुवादक)

सुश्री हरिप्रीता
भगिनी सुश्री वाणी विशालाक्षी, वरिष्ठ अनुवादक

हिंदी साहित्य प्रश्नोतरी

I1. निम्नलिखित में से किस को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है?
(1) जयशंकर प्रसाद (2) महादेवी वर्मा (3) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (4) सुमित्रानंदन पंत

2. निम्नलिखित में से कौन छायावादी कवि नहीं है?
(1) माखनलाल चतुर्वेदी (2) महादेवी वर्मा (3) सुमित्रानंदन पंत (4) जयशंकर प्रसाद

3. मैला आँचल के रचयिता कौन हैं?
(1) शिवपूजन सहाय (2) रामचंद्र शुक्ल (3) फणीश्वर नाथ रेणु (4) प्रेमचंद

4. निम्नलिखित में से प्रेमचंद द्वारा रचित किस उपन्यास को उत्तरभारतीय ग्रामीण जीवन का महाकाव्य कहा जाता है?
(1) गबन (2) गोदान (3) प्रेमाश्रम (4) निर्मला

5. ईदगाह कहानी किसके द्वारा लिखी गई है?
(1) महादेवी वर्मा (2) कृष्णा सोबती (3) प्रेमचंद (4) अज्ञेय

6. "लिखते तो वो लोग है जिनके अंदर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है, जिन्होंने धन और भोग विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है, वे क्या लिखेगे?"
उपरोक्त कथन किस रचनाकार का है?
(1) प्रेमचंद (2) राजेंद्र यादव (3) मन्नू भंडारी (4) रामदयाल मुण्डा

7. हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले कवि कौन हैं?
(1) महादेवी वर्मा (2) माखनलाल चतुर्वेदी (3) सुमित्रानंदन पंत (4) कृष्णा सोबती

8. बीजक के रचनाकार कौन हैं?
(1) सूरदास (2) जायसी (3) तुलसीदास (4) कबीर

9. निम्नलिखित में निर्गुणपंथी कौन है?
(1) सूरदास (2) तुलसीदास (3) जायसी (4) कबीर

10. "जे-हाल-ए मिस्की मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाए बतियाँ" किसकी पंक्तियां हैं?
(1) जायसी (2) सूरदास (3) अमीर खुसरो (4) कबीर

उत्तर

(1) सुमित्रानंदन पंत (2) माखनलाल चतुर्वेदी (3) फणीश्वर नाथ रेणु (4) गोदान
(5) प्रेमचंद (6) प्रेमचंद (7) सुमित्रानंदन पंत (8) कबीर
(9) कबीर (10) अमीर खुसरो

श्री के. पी. यादव
महानिदेशक

सह्याद्रि परिवार की ओर से कार्यालय के सभी सेवानिवृत्त सदस्यों को सेवानिवृत्त-जीवन की शुभकामनाएँ

क्र.सं.	नाम	पद	सेवानिवृत्ति दिनांक
1.	श्रीमती वी.वी.कदम	व.ले.प.	10/31/2020
2.	श्रीमती मेरी ओ एलेक्स	निदेशक	11/30/2020
3.	श्रीमती जया सतीश नायर	स.ले.प.अ.	12/21/2020
4.	श्रीमती सथिदेवी नायर	आशुलिपिक	01/04/2021
5.	श्रीमती एन.जे. हतकर	पर्यवेक्षक	02/01/2021
6.	श्री वी. पी. प्रेमलाल	व. निजी सचिव	03/31/2021
7.	श्रीमती ज्योत्स्ना जे. साल्वी	स.ले.प.अ.	04/01/2021
8.	श्री वाई आर. सावंत	ब.का.क.	06/30/2021
9.	श्री आर. एस. बुरंडे	स.ले.प.अ.	07/31/2021
10.	श्रीमती वी. वी. परब	पर्यवेक्षक	08/31/2021

श्री. पी. आर. वाघेला

ब.का.क.

निधन दिनांक 09/06/2021

अंतिम पृष्ठ : फोटोग्राफ साभार श्री. के. पी. यादव महानिदेशक लेखापरीक्षा

स्थान : कान्हेरी केव

2021 स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

15/08/2021 के ध्वजारोहण के अवसर पर माननीय महानिदेशक महोदय

15/08/2021 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर माननीय महानिदेशक अन्य समूह अधिकारीगण

15/08/2021 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर माननीय महानिदेशक द्वारा संबोधन

श्री पद्माकर कुशवाहा (निदेशक-आर.ए.-२) द्वारा संबोधन

सुश्री रचना जयपाल सिंह, उपनिदेशक (प्रशासन) द्वारा संबोधन

“प्रकृति ने उस किसी को धोखा नहीं दिया
जिसने उससे मोहब्बत की”